भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 **अप्रैल** 2010 **अंक** 4

शब्द

यह सोचकर
जो एक शब्द
हिफ़ाज़त से रख दिया था
किताबों में
एक दिन

कि कभी फुर्सत में
देखूँगा उसे
कि वह छतनार पेड़
अभी बना
या नहीं
यह जानते हुए भी कि
फुर्सत
हर्गिज़ ज़िन्दगी में
मिलेगी ही नहीं।

दया करते हुए शब्द ने
उँड़ेल दी
अपनी सम्पूर्ण ममता
मुझ पर
जैसे माँ उँड़ेलती है
अपनी सम्पूर्ण ममता
बच्चे पर

शब्द ही है
आदि और अन्त
शब्द ही है
जिसे नहीं आती है मृत्यु
शब्द ही है
जो समय के हर बीहड़ को
चुनौती देता हुआ

हर ध्रुवान्त पर
मुस्काता हुआ मिलता है।

शब्द
मनु की
कामना-सा उगा है
हर कल्पान्त पर

शब्द हमेशा
रोशनी के प्रपात की तरह
फूटा है अंधेरे की छाती से

अंधी-आँधी के बीच

आज हम जिस युग में जी रहे हैं, जिस समाज में भागीदारी कर रहे हैं, जिस प्रतिष्ठान में काम कर रहे हैं, जो भी व्यवसाय कर रहे हैं, जिस भी लक्ष्य को पाने के लिए अग्रसर हैं, वहाँ सर्वत्र एक किस्म का अतिवाद व्याप्त है। धीरे-धीरे यह अतिवाद ही हमारे युग की मानसिकता बन चला है। यहाँ कुछ पल ठहर कर साँस लेने का अवकाश नहीं, मनन-चिंतन की गुंजाइश नहीं, है तो सिर्फ दौड़-धूप, जल्दीबाजी, आपा-धापी।

प्रतियोगिताओं के इस दौर में स्वार्थपरक होती जा रही हैं हमारी धार्मिक-आस्थाएँ और शिक्षा। आन्तरिक-अतिवाद के अनाचार से प्रभावित है जीवन का प्रत्येक क्षेत्र। साहित्य, संस्कृति, खेलकूद, मनोरंजन, राजनीति, प्रशासन, व्यवसाय आदि विभिन्न क्षेत्रों में जहाँ देखिये, वहाँ अतिवाद व्याप्त है। एक-दूसरे को पछाड़कर आगे निकलने की होड़ में अनजाने भाव से हम केवल 'रोबोट' बनते जा रहे हैं, हाड़-मांस का संजीवित रोबोट। इस रोबोट की मनोरचना में पर्यावरण के प्रदूषण की तरह घुलता जा रहा है ईर्ष्या-द्वेष और कटुता का ज़हर, बढ़ती जा रही है रक्त-तृष्णा, फैलता जा रहा है हिंस्र-आतंक का रक्तरंजित मानचित्र।

'सरवॉइवल ऑव् द फिटेस्ट' की अवधारणा के तहत ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ नयी से नयी तकनीकों से लैस होकर भी हम खोते जा रहे हैं अपना स्वत्व, अपने भीतर का मनुष्य, अपने ही अंतर्तम का देवता—अपना आत्म-पुरुष। आज दुर्लभ हैं युगानुकूल सत्य और धर्म की कसौटियाँ, मानव-मूल्य और नैतिकताएँ, संघर्षशील सार्थक-जीवन और तपोद्दीप्त युग-दर्शन।

कई हजार वर्षों की सांस्कृतिक-यात्रा के बाद भी हमारे समाज का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा अशिक्षित, अर्धशिक्षित, पिछड़ा हुआ, निर्धन जीवन जी रहा है। 40 प्रतिशत मध्यम वर्ग शिक्षित होकर भी आर्थिक-दृष्टि से तीन-स्तरों में विभाजित है; जिनमें विभिन्न जातीय, प्रान्तीय, भाषायी-समुदायों के लोग शामिल हैं। चौतरफा, समग्र विकास की गति में सभी गतिमान हैं, किन्तु खो रहा है वह सब-कुछ जिसे अपने पुरा-कल्प से आज तक की यात्रा में हमने उपलब्ध किया है। आज सब कुछ खरीदा जा सकता है इस विश्व-बाज़ार में, हमारी जरूरत का हर माल मौजूद है यहाँ, किन्तु अनुपलब्ध है सत्-प्रेरणा और शिव-संकल्प के दृढ़-संस्कारों से निर्मित 'मनुष्य' और इसका कारण है हमारी साहित्य-संस्कार के प्रति उदासीनता। कभी हमारे पूर्वजों ने भी संकेत किया था—'साहित्य-संगीत-कलाविहीनः साक्षात पशुः पुच्छ विषाणहीनः।' इस संकेत को समझना होगा कि सारा ज्ञान-विज्ञान हासिल करके भी साहित्य-अध्ययन के बिना कहीं हम सींग और पूँछ के बिना, दो पैरों पर चलने वाला 'पशु' तो नहीं बनते जा रहे हैं। मनुष्य होने का यही तकाजा हमें साहित्य और संस्कृति की ओर खींचता है। और इसी संस्कार के उपनयन के लिए जरूरी है सत्साहित्य का अध्ययन, जहाँ मनुष्य ही 'वामन' से 'विराट्' बनता है और उसके विश्वरूप में प्रतिभासित हो उठता है यह चराचर जगत।

इस साहित्य-संस्कार के अभाव में ही भौतिक-भोग की अन्धी-आँधी में हम खो चले

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

हैं अपनी अन्त:दृष्टि, हमारी संवेदनाओं का क्षरण हो रहा है, लुप्त हो चली है सम्बन्धों की अर्थवत्ता, अवरुद्ध है भावनाओं का संवेग। आज हमारा ही शिशु हमारे लिए 'आत्मज' न होकर, हमारे शरीर का 'बाइ-प्रॉडक्ट' बन गया है। यांत्रिक-जीवन की विषाक्त-मानसिकता से निर्मित हाड़-मांस का यह पुतला कोई नयी सर्जना तो नहीं कर सकता किन्तु कितना विध्वंस और करेगा, नहीं कहा जा सकता। इस तमोग्रस्त-अंधड़ में भी कभी-कभी रोशनी की किरन दिख जाती है, सुनायी पड़ता है अमृतमय उद्‌बोधन। कोई युगद्रष्टा कवि पुकार-पुकार कर कहता है—

रसवती भू के मनुज का श्रेय,
यह नहीं विज्ञान कटु, आग्नेय।
श्रेय उसका प्राण में बहती वायु,
मानवों के हेतु अर्पित मानवों की आयु!
.....
दिव्य भावों के जगत में जागरण का गान,
मानवों का श्रेय, आत्मा का किरण-अभियान।

सर्वेक्षण

● **ज्ञान का बाज़ार :** बकलम 'कार्लमार्क्स'—''बाजार में आकर विद्या जैसी पवित्र वस्तु भी अपवित्र हो जाती है।'' तो साहब, आज के वैश्वक-बाज़ार में हर भौतिक वस्तु की तरह ज्ञान-विज्ञान भी बिकाऊ माल है, जिसे आदमी अपनी आर्थिक हैसियत के मुताबिक ही खरीद सकता है। देश के नगरों, महानगरों में गली-गली विद्या की दुकानें खुल चुकी हैं, उच्च शिक्षा के लिए निजी महाविद्यालय भी खुलते जा रहे हैं। इन विद्यालयों-महाविद्यालयों में यहाँ तक कि विश्वविद्यालयों में भी आरक्षण के चलते अयोग्यता के बावजूद जब पिछड़ों को अवसर मिलता है तो सामान्य-वर्ग की योग्यता उसकी कुंठा बनकर प्रतिफलित होती है। इन समस्याओं का समाधान न हुआ तो राष्ट्रीय तौर पर प्रतिभा-हनन की जिम्मेदारी भी सरकार की ही मानी जायेगी। दूसरी ओर हमारी सरकार ने अपने विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए संसाधन जुटाने की कोशिश भी शुरू की है किन्तु 'रेड-कार्पेट' बिछाकर विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए पथ प्रशस्त करना एक खतरनाक-आगाज़ है। बकौल प्रो० यशपाल के कि ''विदेशी संस्थान यहाँ आकर कमाई तो करेंगे, लेकिन हमारी जरूरतों को क़तई पूरा नहीं करेंगे।'' × × सरकार सामान्य दाखिला-दर (जी०ई०आर) बढ़ाने की बात तो कर रही है किन्तु जब तक वंचितों को अवसर ही न मिलेगा, तो कैसे बढ़ेगा सरकारी 'जी०ई०आर०'?

●● **आँखों देखी :** लोकसभा में जन-प्रतिनिधियों की धींगामुश्ती, जूतम पैजार, राजसभा में महामहिम उपराष्ट्रपति के साथ बेअदबी; जननेताओं के रजत-स्वर्णकिरीट, संसद में नोटों के लहराते बण्डल, जनता की महारैली में विशाल अजगर की तरह कुण्डलित सावर्णिक-नोट-माला, कहाँ तक गिनाएँ तथाकथित जननायकों के लोकाचरण जो हर वैधानिक मर्यादा का अतिक्रमण कर चुके हैं। धन और शक्ति का यह 'शार्ट-कट' राजनीतिक-राजपथ आज देश के युवावर्ग को आकर्षित कर रहा है। छोटी-बड़ी सरकारी ठेकेदारियों से लेकर ग्राम-प्रधान, ब्लॉक-प्रमुख, विधायक, सांसद आदि के चुनावों तक इसी धनबल, बाहुबल का साम्राज्य फैला हुआ है। शक्ति और धन के इस निर्लज्ज-अभिचार को रोकने की वैधानिक-शक्ति भी जनता के हाथ में ही है। आखिर कब चेतेगी इस महान देश की महान जनता? कब दण्डित होगा राजनीतिक-पूँजी का दुराचरण? कैसे रुकेगा अनाचार का यह नग्न-नर्तन?

●●● **विष-बीज :** थोक वोट की लालच में अल्पसंख्यकों के आरक्षण सम्बन्धी आन्ध्र प्रदेश सरकार के विवादित प्रस्ताव को स्वीकृति देकर हमारे सर्वोच्च-न्यायालय ने सामाजिक-विप्लव के साथ देश के पुनर्विभाजन के बीज बो दिये हैं। मण्डल-आयोग की रिपोर्ट के कार्यान्वयन ने तो केवल सवर्णों और दलितों के बीच दूरी बढ़ायी किन्तु 'रंगनाथ मिश्रा' और 'सच्चर कमेटी' की रिपोर्ट तो एक अग्रणी राजनीतिक पार्टी द्वारा सर्जित राष्ट्रीय विभाजन की रूपरेखा है। दलित, पिछड़े और निर्धन तो देश के हर समुदाय, हर पंथ में हैं; उनके समान विकास की प्रक्रिया को तीव्र करने के बजाय पंथ-विशेष को प्रश्रय देना किस मानसिकता का सूचक है, इसका क्या परिणाम होगा यह तो भविष्य के गर्भ में है। किन्तु इन तमाम विसंगतियों के बीच बार-बार प्रश्न करती है क्षुब्ध-विकल-मन की आस्था—

साम्य की वह रश्मि स्निग्ध, उदार
कब खिलेगी, कब खिलेगी विश्व में भगवान?
कब सुकोमल ज्योति से, अभिसिक्त
हो, सरस होंगे जली-सूखी रसा के प्राण?

—परागकुमार मोदी

विदेशी विश्वविद्यालय मूल संस्कृति को बढ़ावा नहीं देते : वेंकी

लंदन। भारतीय मूल के नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकटरमन रामकृष्णन (रसायन शास्त्र के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित) का कहना है कि पश्चिमी देश के जो विश्वविद्यालय बाहरी देशों में अपने कैम्पस खोलते हैं वह मूल संस्कृति को बढ़ावा नहीं देते बल्कि उनके लिए वह नया बाजार होता है। उन्होंने कहा, ''जहाँ कहीं भी इन विश्वविद्यालयों ने कैम्पस स्थापित किए चाहे वह सिंगापुर हो अथवा कोई देश वे अपनी मूल संस्कृति को आगे बढ़ावा देने में विफल रहे।'' उन्होने कहा कि कैम्ब्रिज जैसे शीर्ष विश्वविद्यालय अन्य देशों में परिसर नहीं खोलते। जो भी ''मौजूदा परिसर हैं वे व्यावसायिक कारण से खोले गए हैं।'' वेंकी के नाम से जाने जानेवाले भारतीय मूल के वेंकटरमन लेकिन इस बात से सहमत हैं कि भारत में पश्चिमी विश्वविद्यालय का कैम्पस शिक्षाविदों के वेतन में इजाफा करेगा। उन्होंने कहा कि भारत में 'विश्व स्तर के और अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त' वैज्ञानिक हैं लेकिन उन्हें अधिक 'आदर्श' वैज्ञानिकों की जरूरत है।

पुस्तक-प्रेरणा

पुस्तकें ज्ञान का सागर हैं
डुबकी ले, रत्न पकड़ लाओ,
फिर ज्ञान-रत्न से जीवन में,
जो भी चाहो उसको पाओ।
पुस्तक ही सबका मन्दिर है,
जाकर के वहाँ प्रणाम करो,
शोधार्थी, ज्ञानी, विज्ञानी बन,
जग में अपना नाम करो।

—डॉ० रामसुमेर यादव

नॉर्वे में लहराता हिन्दी का परचम

—अमित जोशी

उत्तरी यूरोप में 'अर्द्धरात्रि के सूर्य' के देश नॉर्वे में हिन्दी की स्थिति सुदृढ़ हुई है। करीब 46 लाख की आबादी वाले इस देश में भारतीयों की संख्या लगभग 7,000 है। यहाँ के अधिकतर भारतीय पंजाबी भाषा का प्रयोग करते हैं, लेकिन हिन्दी भी बोल-समझ लेते हैं। ये भारतीय अपने बच्चों को प्राथमिक से विश्वविद्यालय तक हिन्दी पढ़ा सकते हैं। नॉर्वे के ओस्लो विश्वविद्यालय में एक सम्पूर्ण विभाग है, जहाँ ईरानी व भारतीय भाषा परिवार की अनेक भाषाएँ सिखाने की व्यवस्था है। ओस्लो विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रो० जोलर, फीन पीसन आदि प्राध्यापक हैं। प्रो० जेंस ब्रोरविग इतिहास विभाग में प्रोफेसर हैं, परन्तु भारत में रहकर उन्होंने संस्कृत सीखी है। उन्होंने *श्रीमद्भगवद्गीता* का संस्कृत से नॉर्वेजियन में अनुवाद किया है।

स्वर्गीय पूर्णिमा चावला ने भी लगभग पन्द्रह वर्षों तक ओस्लो के स्कूलों में हिन्दी पढ़ाने का कार्य किया था। इस हिन्दी लेखिका ने नॉर्वेजियन कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया था। अपने पति और उर्दू के लेखक हरचरण चावला के साथ मिलकर उन्होंने नॉर्वे में हिन्दी साहित्यकारों के लिए 'साहित्य विचार सभा' की शुरुआत की थी। कुछ वर्ष पूर्व ही इस लेखक दम्पत्ति का निधन हुआ है।

शुरुआत के कुछ वर्षों में प्रवासी भारतीय अपने बच्चों को हिन्दी पढ़ाने के प्रति बहुत गम्भीर नहीं थे, लेकिन हाल के दौर में यह धारणा बदली है। हिन्दी के प्रति उनकी रुचि बढ़ी है। 'विश्व हिन्दू परिषद्' में ओमवीर उपाध्याय और 'सनातन मन्दिर सभा' में पण्डित जी की ओर से हिन्दी की कक्षाएँ चलाई जाती रही हैं, ताकि भारतीय मूल के बच्चों को हिन्दी सीखने के साथ भारतीय संस्कार भी मिलें।

यद्यपि नॉर्वे में प्रवासी भारतीयों ने लगभग 30-35 वर्ष पूर्व ही रहना आरम्भ किया है, किन्तु इस अल्प अवधि में ही उन्होंने अपनी अलग पहचान बना ली है। इस बीच अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। *परिचय, पहिचान, त्रिवेणी, अल्फा ओमेगा, अप्रवासी टाइम्स, सनातन मंच* आदि पत्रिकाएँ कुछ समय पश्चात बन्द हो गईं। सुरेश चन्द्र शुक्ला कई वर्षों से *स्पाइल* नामक पत्रिका व 'इंडोनॉर्वेजियन कल्चरल फोरम' चला रहे हैं।

जनवरी, 1990 से वहाँ *शांतिदूत* का प्रकाशन शुरू हुआ। इसका प्रसार केवल नॉर्वे तक सीमित नहीं है। विश्व के लगभग 130 देशों में करीब दो करोड़ से अधिक प्रवासी भारतीय या भारतीय मूल के लोग बिखरे हुए हैं, जिनका कोई सार्थक मंच नहीं है। *शांतिदूत* के प्रकाशन के पीछे उद्देश्य रहा है कि उन सबको एक सूत्र में बाँधा जाए तथा अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया जाए। यह पत्रिका आज 150 से अधिक देशों व 130 विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ी जा रही है।

नॉर्वे में प्रवासी भारतीयों का कोई अपना रेडियो नहीं है, लेकिन हिन्दी प्रेमी बीबीसी और डोयचे वैले भी सुनते हैं। नॉर्वेजियन टेलीविजन व अन्य चैनलों में वर्ष में दो-तीन बार हिन्दी और भारतीय भाषाओं की फिल्में 'सब टाइटल्स' के साथ देखने को मिल जाती हैं। यहाँ जी टीवी, सोनी टीवी, जी सिनेमा, बीफोरयू मूवी, एम टीवी आदि चैनलों को अपार लोकप्रियता मिली है। पाकिस्तानी, ईरानी और अफ्रीकी भी इन्हें चाव से देखते हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी फिल्मों का भी बड़ा योगदान है। नई हिन्दी फिल्मों का प्रदर्शन सिनेमाघरों में होता रहता है।

हिन्दी में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ भी यहाँ देखने को मिल जाती हैं। ओस्लो के 'दायकमास्के' पुस्तकालय में हिन्दी के प्रमुख दैनिक पत्रों के साथ हिन्दी के नए-पुराने लेखकों की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। प्रवासी भारतीयों की एक अग्रणी संस्था है, 'स्कैंडेनेवियन भारत साहित्य एवं संस्कृति मंच'। नॉर्वे के सुविख्यात अभिनेता लार्स अंद्रियास लार्समन इसके अध्यक्ष हैं।

वर्ष 1993 में 'हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में' विषय पर तीन दिवसीय एक सेमिनार यहाँ आयोजित किया गया था, जिसमें डॉ० श्रीकान्त जिचकर, स्वर्गीय शंकर दयाल सिंह, सांसद वीणा सिंह के साथ हिमांशु जोशी व डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय भी आमन्त्रित किए गए। ओस्लो में भारत-नॉर्वे मैत्री भवन के तत्वावधान में वर्ष 1992 में हिन्दी प्रचार-प्रसार के लिए एक हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना भी की गई थी।

'स्कैंडेनेवियन भारत साहित्य एवं संस्कृति मंच' नाम की संस्था ने नॉर्वे में हिन्दी साहित्य के प्रसार के लिए भी कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। नॉर्वे की श्रेष्ठ लोककथाओं का अनुवाद हिन्दी में आया है। शीघ्र ही *बाल रामायण* हिन्दी से नॉर्वेजियन में छप रही है। हिमांशु जोशी का उपन्यास *कगार की आग* नॉर्वेजियन में अनूदित हुआ। यहाँ के विश्व प्रसिद्ध नाटककार हेनरिक इब्सन का सम्पूर्ण नाट्य साहित्य शीघ्र ही हिन्दी में अनूदित होकर आ रहा है। हिन्दी के साहित्यकारों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित करने के लिए नॉर्वे में 2006-07 से ही 'हेनरिक इब्सन अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य पुरस्कार' की शुरुआत की गई है। आगामी कुछ वर्षों में हिन्दी की बहुत-सी पुस्तकों को नॉर्वेजियन में उपलब्ध कराने की योजना है।

—'*अमर उजाला*' से साभार

पद्म-विभ्रम

'इण्डियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित भेंटवार्ता में कृष्णा सोबती ने कहा कि लेखकों को सरकार और राज्याश्रय से दूरी बनाए रखनी चाहिए। मैंने प्रस्तावित सम्मान को स्वीकार न करने का निर्णय उचित ही लिया है। उन्होंने कहा, जैसे ही मुझे गृह मंत्रालय के अधिकारी द्वारा सम्मान की पूर्व सूचना मिली, मैंने तभी कह दिया था कि कृपया इस प्रसंग को यहीं समाप्त समझें ताकि सम्मान की घोषणा होने के बाद अनावश्यक विवाद खड़ा न हो। अधिकारी ने मुझसे कहा, राष्ट्र आपको सम्मानित करना चाहता है। मैंने सविनय धन्यवाद किया और यह भी कहा कि मेरा सम्मान पहले ही हो चुका है। किसी भी लेखक के लिए 'साहित्य अकादमी' का सम्मान ही सर्वश्रेष्ठ सम्मान है।

इसी प्रकार श्री बादल सरकार ने भी इस सम्मान को अस्वीकार करते हुए यह कहा कि इस सम्मान प्रक्रिया के पीछे सरकार की नीति यह है कि कुछ प्रभावशाली लेखक-कलाकार उनके साथ खड़े हों। मैं इसे उचित नहीं मानता। वैसे प्रत्येक व्यक्ति का अपना सोचने का ढंग है।

❑ ❑ ❑

पद्म पुरस्कारों को लेकर विवाद होता रहा है और पूरे देश से विभिन्न मानवीय क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए सौ-सवा सौ लोगों को चुनना खासा कठिन और दीर्घसूत्री होता है। फिर भी, यह बात अलक्षित नहीं जा सकती कि इस बार हिन्दी से कुल एक कवि, एक दार्शनिक और एक विद्वान को चुना गया और तीनों को सिर्फ पद्मश्री दिया गया। जानकीवल्लभ शास्त्री, मुकुंद लाठ और गोविंदचंद्र पाण्डे, सभी वरिष्ठ हैं : सभी की उपलब्धि 'श्री' से ऊपर की है और शास्त्रीजी और पाण्डेजी तो अत्यन्त वयोवृद्ध हैं। उन्हें सिर्फ 'श्री' देना और उनसे कमतर उपलब्धि के खिलाड़ियों और अभिनेताओं को 'भूषण' देना पुरस्कार और उसके पीछे के प्रतिमानों को संदिग्ध बनाता है। हिन्दी से नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव, कृष्ण बलदेव वैद, अमरकांत, मार्कण्डेय, केदार नाथ सिंह आदि का पद्मसूची में अब तक न आ पाना ऐसे पुरस्कारों को हिन्दी और उसके साहित्य-समाज के लिए सर्वथा अप्रासंगिक भी बनाता है।

लेखकों और रंगकर्मियों को इस बात का अभिमान होना चाहिए कि उनके बीच कृष्णा सोबती और बादल सरकार जैसी हस्तियाँ हैं, जिन्होंने पद्म पुरस्कार लेने से इनकार कर सृजन के अप्रतिहत स्वाभिमान पर हम सबका फिर से ध्यान दिलाया है। याद आता है कि घोषणा के पहले कुमार गंधर्व और जगदीश स्वामीनाथन ने भी पद्मश्री लेने से इनकार कर दिया था। हमें कृतज्ञ और अभिभूत होना चाहिए कि हमारे यहाँ तेजस्विता की एक परम्परा है, सशक्त, सजीव और सक्रिय।

—अशोक वाजपेयी

भाषा तो हिन्दी ही होनी चाहिए

—महात्मा गाँधी

शिक्षा : तालीम का अर्थ क्या है? अगर उसका अर्थ अक्षर-ज्ञान ही हो, तो वह तो एक साधन जैसी ही हुई। उसका अच्छा उपयोग भी हो सकता है और बुरा उपयोग भी हो सकता है। एक शस्त्र से चीरफाड़ करके बीमार को अच्छा किया जा सकता है और वही शस्त्र किसी की जान लेने के लिए भी काम में लाया जा सकता है। अक्षर-ज्ञान का प्रयोग भी ऐसा ही है। बहुत से लोग उसका बुरा उपयोग करते हैं, यह तो हम देखते ही हैं। उसका अच्छा उपयोग प्रमाण में कम ही लोग करते हैं। यह बात अगर ठीक है तो इससे यह साबित होता है कि अक्षर-ज्ञान से दुनिया को फायदे के बदले नुकसान ही हुआ है।

शिक्षा का साधारण अर्थ अक्षर-ज्ञान ही होता है। लोगों को लिखना, पढ़ना और हिसाब करना, सीखना बुनियादी या प्राथमिक-प्राइमरी-शिक्षा कहलाती है। एक किसान ईमानदारी से खुद खेती करके रोटी कमाता है। उसे मामूली तौर पर दुनियावी ज्ञान है। अपने माँ-बाप के साथ कैसे बरतना, अपनी स्त्री के साथ कैसे बरतना, बच्चों से कैसे पेश आना, जिस देहात में वह बसा हुआ है वहाँ उसकी चाल-ढाल कैसी होनी चाहिए, इन सबका उसे काफी ज्ञान है। वह नीति के नियम समझता है और उसका पालन करता है। लेकिन वह अपने दस्तखत करना नहीं जानता। इस आदमी को आप अक्षर-ज्ञान देकर क्या करना चाहते हैं? उसके सुख में आप कौन-सी बढ़ती करेंगे? क्या उसकी झोंपड़ी या उसकी हालत के बारे में आप उसके मन में असन्तोष पैदा करना चाहते हैं? ऐसा करना हो तो भी उसे अक्षर-ज्ञान देने की जरूरत नहीं है। पश्चिम के असर के नीचे आकर हमने यह बात चलायी है कि लोगों को शिक्षा देनी चाहिए। लेकिन उसके बारे में हम आगे-पीछे की बात सोचते ही नहीं।

अब ऊँची शिक्षा को लें। मैं भूगोल-विद्या सीखा, खगोल-विद्या (आकाश के तारों की विद्या) सीखी, बीजगणित (एलजेब्रा) भी मुझे आ गया, रेखागणित (ज्यॉमेट्री) का ज्ञान भी मैंने हासिल किया, भू-गर्भविद्या को भी मैं पी गया। लेकिन उससे क्या? उससे मैंने अपना कौन-सा भला किया? अपने आसपास के लोगों का क्या भला किया? किस मकसद से मैंने वह ज्ञान हासिल किया? उससे मुझे क्या फायदा हुआ? एक अंग्रेज विद्वान (हक्सली) ने शिक्षा के बारे में यों कहा है—''उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसके शरीर को ऐसी आदत डाली गई है कि वह उसके बस में रहता है, जिसका शरीर चैन से और आसानी से सौंपा हुआ काम करता है। उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसकी बुद्धि शुद्ध, शांत और न्यायदर्शी है। उसने सच्ची शिक्षा पाई है, जिसका मन कुदरती कानूनों से भरा है और जिसकी इन्द्रियाँ उसके बस में हैं, जिसके मन की भावनायें बिलकुल शुद्ध हैं, जिसे नीच कामों से नफरत है और जो दूसरों को अपने जैसा मानता है। ऐसा आदमी ही सच्चा शिक्षित (तालीमशुदा) माना जायेगा, क्योंकि वह कुदरत के कानून के मुताबिक चलता है। कुदरत उसका अच्छा उपयोग करेगी और वह कुदरत का अच्छा उपयोग करेगा।'' अगर यही सच्ची शिक्षा हो तो मैं कसम खाकर कहूँगा कि ऊपर जो शाखा मैंने गिनायी हैं उनका उपयोग मेरे शरीर या मेरी इन्द्रियों को बस में करने के लिए मुझे नहीं करना पड़ा। इसलिए प्राइमरी-प्राथमिक शिक्षा को लीजिये या ऊँची शिक्षा को लीजिये, उसका उपयोग मुख्य बात में नहीं होता। उससे हम मनुष्य नहीं बनते—उससे हम अपना कर्त्तव्य नहीं जान सकते.....

करोड़ों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। मैकाले ने शिक्षा की जो बुनियाद डाली, वह सचमुच गुलामी की बुनियाद थी। उसने इसी इरादे से अपनी योजना बनाई थी, ऐसा मैं नहीं सुझाना चाहता। लेकिन उसके काम का नतीजा यही निकला है। यह कितने दु:ख की बात है कि हम स्वराज्य की बात भी पराई भाषा में करते हैं?

जिस शिक्षा को अंग्रेजों ने ठुकरा दिया है वह हमारा सिंगार बनती है, यह जानने लायक है। उन्हीं के विद्वान कहते रहते हैं कि उसमें यह अच्छा नहीं है, वह अच्छा नहीं है। वे जिसे भूल-से गये हैं, उसी से हम अपने अज्ञान के कारण चिपके रहते हैं। उनमें अपनी-अपनी भाषा की उन्नति करने की कोशिश चल रही है। वेल्स इंग्लैण्ड का एक छोटा सा परगना है, उसकी भाषा धूल जैसी नगण्य है। ऐसी भाषा का अब जीर्णोद्धार हो रहा है।

आपको समझना चाहिए कि अंग्रेजी शिक्षा लेकर हमने अपने राष्ट्र को गुलाम बनाया है। अंग्रेजी शिक्षा से दंभ, राग, जुल्म वगैरा बढ़े हैं। अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए लोगों ने प्रजा को ठगने में, उसे परेशान करने में कुछ भी उठा नहीं रखा है। अब अगर हम अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए लोग उसके लिए कुछ करते हैं, तो उसका हम पर जो क़र्ज चढ़ा हुआ है उसका कुछ हिस्सा ही हम अदा करते हैं।

यह क्या कम जुल्म की बात है कि अपने देश में अगर मुझे इंसाफ पाना हो, तो मुझे अंग्रेजी भाषा का उपयोग करना चाहिए। बैरिस्टर होने पर मैं स्वभाषा में बोल ही नहीं सकता! दूसरे आदमी को मेरे लिए तरजुमा कर देना चाहिए। यह कुछ कम दंभ है? यह गुलामी की हद नहीं तो और क्या है? इसमें मैं अंग्रेजों का दोष निकालूँ या अपना? हिन्दुस्तान को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग ही हैं। राष्ट्र की हाय अंग्रेजों पर नहीं पड़ेगी, बल्कि हम पर पड़ेगी।.....

हम सभ्यता के रोग में ऐसे फंस गये हैं कि अंग्रेजी शिक्षा बिलकुल लिये बिना अपना काम चला सकें ऐसा समय अब नहीं रहा। जिसने वह शिक्षा पाई है, वह उसका अच्छा उपयोग करे। अंग्रेजों के साथ के व्यवहार में, ऐसे हिन्दुस्तानियों के साथ के व्यवहार में जिनकी भाषा हम समझ न सकते हों और अंग्रेज खुद अपनी सभ्यता से कैसे परेशान हो गये हैं यह समझने के लिए अंग्रेजी का उपयोग किया जाए। जो लोग अंग्रेजी पढ़े हुए हैं उनकी संतानों को पहले तो नीति सिखानी चाहिए, उनकी मातृभाषा सिखानी चाहिए और हिन्दुस्तान की एक दूसरी भाषा सिखानी चाहिए। बालक जब पुख्ता (पक्की) उम्र के हो जायें तब भले ही वे अंग्रेजी शिक्षा पायें, और वह भी उसे मिटाने के इरादे से, न कि उसके जरिये पैसे कमाने के इरादे से। ऐसा करते हुए भी हमें यह सोचना होगा कि अंग्रेजी में क्या सीखना चाहिए और क्या नहीं सीखना चाहिए। कौन से शास्त्र पढ़ने चाहिये, यह भी हमें सोचना होगा।.....

('*हिन्द स्वराज*' से साभार)

जीवन में किताबों का स्थान कोई नहीं ले सकता, न इंटरनेट, न फिल्म और न ही टीवी क्योंकि इसका कोई विकल्प नहीं है।

—प्रो० सरोजकुमार

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

घोड़े पै हौदा हाथी पर जीन

डॉ० भानुशंकर मेहता

'' ईस्ट इण्डिया कम्पनी के वारन हेस्टिंग्स काशी-नरेश चेतसिंह को प्रताड़ित करने और गिरफ्तार करने काशी आते हैं, जनता के विद्रोह ने उन्हें सहसा भागने पर मजबूर किया, लोगों ने कहा—घोड़े पै हौदा और हाथी पर जीन, भाग गया वारन हेस्टिंग्स। यह काशीवासियों की जीवंतता का प्रतीक है।''

आकार
डिमाई

प्रकार
सजिल्द

पृष्ठ
144

ISBN : 81-89498-12-6 • मूल्य : रु० 120.00

(*पुस्तक के एक नाटक का अंश*)

घोड़े पै हौदा, हाथी पर जीन

वाचक—1 : बलवन्त सिंह के बाद चेतसिंह गद्दी पर बैठे। अवध के नवाबों का सूर्य अस्त हो रहा था। ईस्ट इंडिया कम्पनी धीरे-धीरे देश पर काबिज हो रही थी। बनारस अब कम्पनी सरकार को रक्षा हेतु कर देता था-गवर्नर जनरल हेस्टिंग की माँग बढ़ती जा रही थी। चेतसिंह दुश्मनों से घिरे थे जो कम्पनी सरकार को झूठे समाचार देकर राजा और कम्पनी के बीच भारी मनमुटाव पैदा कर रहे थे।

वाचक—2 : आखिर कम्पनी की माँगें हद से गुजरीं और वारेन हेस्टिंग स्वयं वसूली करने बनारस आया। साथ में छोटी सी फौज भी थी। इरादा था राजमाता रानी पन्ना और चेतसिंह को गिरफ्तार करने का और शिवाला पर पूजा करने आयी राजमाता और चेतसिंह गिरफ्तार हो भी गये-तभी-

वाचक—1 : याद रहे—जैसा भी हो-बनारस वाले अपने राजा को प्यार करते थे-वे कैसे बर्दाश्त करते कि फिरंगी आकर राजा को कैद कर लें। बनारस की जनता ने ठीक समय पर पहुँचकर राजा को छुड़ाया—अंग्रेजी फौज पूरी की पूरी कत्ल कर दी गयी। राजमाता और राजा नौका से रामनगर पहुँचे—हेस्टिंग ने छुपकर जान बचाई—शहर में छोकरों ने शोर मचा दिया-

(*नारा उभरता है—'घोड़े पर हौदा और हाथी पे जीन' शोर दूर चला जाता है-अगली कड़ी नहीं सुनाई देती।*)

लोटन—आहा, नागर गुरू चलल आवत हउअन। का गुरू—पाऽ लागी।

नागर—मस्त रहऽ

लोटन—गुरू एहर कबीर चौरा क कैसे भाग जागल हौ।

नागर—लोटन, बस ऐसे ही जात रहली भास्करा तक कि देखली कि माधो बाग के सामने हाथी हौ, ओपर जीन कसल बाय, घोड़वा हाथी का हौदा ढोवत हौ—रजवा क सिपाही इन्हें घेर कर गलचौर कर रहल हउअन। ई सब का हौ। ई कैसन तमासा बनौले हौअ।

लोटन—अरे, राजमाता क हुकुम हौ, औ का। सुनलऽ नाहीं कम्पनी बहादुर भाग गैल—नौ दू गियारह (*हँसता है*)

नागर—ऐसे नाहीं—हाँ—बैठके ठीक से बताव कि का बात हौ। का बताई हम विन्ध्याचल गयल रहली—बस चललै आवत हई। पता नहीं हिंया का गड़बड़ाध्याय हो गयल। हाँ तो लोटन...

लोटन—गुरु—गोरा साहब—माने हस्तीन—सरवा परसों राजा से-जुरमाना वसूलै बनारस आय गैल—यहीं माधो बाग में ठहरल रहल साथ में गोरन की फौज-दमामा-आगे पीछे कुबड़ा मौलवी-कोतवाल-चेतराम और केतने तेल लगावे वाले। सहर में सन्नाटा रहल-राम जाने का होई-रजवा का फौज भी छावनी में बैठ के भाँग छानत रहल। तौन भला हो राजमाता क—ऊ सब महाजन लोगन के—ननकू सिंह—बोधी सिंह के बुलाय के कहिन की बनारस की रच्छा करो। तौन बिहाने राजमाता सिवाला पै पूजा के वास्ते आई तो कुबड़वा—फिरंगी के साथ पहुँच गैल-एहर अपने जवान भी पहुँच गैलन—चलल गोजी—गँडासा—गाजर मूली की तरह काट के रख देहलन फिरंगिन के—अब न पता चलल गुरू की हस्तिनवा वहीं भूँसा वाली कोठरी में लुकल रहल। जब हम ई खबर राजमाता के देहली त उ कहलिन कि बस यही मौका हौ—हाथी पर जीन कस द और घोड़ा पर हौदा—जेम्मे मालूम हो कि सहेबवा घबराय के भागल हौ। एतनै से बनारसिन के फेर जोस आय जाई। सुना गुरू लड़िकवा का चिल्लात हौवन।

(*लड़कों के अस्पष्ट नारे*)

अरे ऊ देखा—लदबन सहुआ हौ—बालबच्चा—दूनो मेहरारू लिबड़ी बरताना लिये कहाँ जात हौ। बिनही एसारे के हिंया गइली तो कहवा देहलेस कि घरे नाहीं हौअन। तनी पूछीं कि घरे नाहीं रहलन त आय कहाँ से गईलऽ।

नागर—ठहर रे लोटनवाँ, हमहूँ चलत हई।

(*सारंगी पर 'हाथी पर जीन' धुन बजती है।*)

(*लबदन साहू का घर*)

लबदन—बड़ी सहुआइन—आज हमार जन्म दिन हौ और पूजा पाठ खुशी मनावै के बदले सबेरे से किच्वाइन मचल हौ—हमार साल गिरह नाहीं जैसे गिरह दसा आय गइल हौ।

बड़ी—काहे ऐसन बात बोलत हउव। लइकवा बेराम हौ—मुँहवा में छाला पड़ गयल हौ—कुछ खात पियत नहीं हौ। देखत नहीं हौअव—कैसन झुराय गयल हौ।

लबदन—जो बेराम हौ—तो बैदजी के जाके दिखावे।

बड़ी—देखउले रहलीं—कहलन 'फरंग' रोग हौ—इ जाने कौन सा रोग हौ।

लबदन—फिरंग रोग—और कुकरम कर—थू—

लड़का—(*कराह कर*) बापू, थूकत नाहीं बनत—बड़ा कष्ट हौ।

लबदन—तोसे थूकत नाहीं बनत त ना सही। दुनिया त तोरे मुँह पर थूकत हौ।

बड़ी—सरम नाहीं आवत—अपने लड़का से ऐसी बात कहत हौवऽ-अरे ओही तोहें पानी देई—हाय-हाय।

लबदन—कलमुँही भैंस-बिहाने बिहाने काने के जड़ी चर चराये लगल।

बड़ी—निगोड़ा कुक्कुर, निरबंसा—बिहाने-बिहाने लड़िका के कोसैं लग गयल। जे बिहाने एकर नाव ले ले, ओ के दिन भर अन्न क दरसन न होय।

लबदन—अब बहुत भयल—ई महाभारत बंद करऽ—पूजा का पिरबंध करऽ छोटकी तोहीं इनसे कुछ कह।

छोटी—जीजी—आखिर कहलत त अपने बेटवा के न कोई पराये के तो नाही—जाय द।

लबदन—पंडित जी से कहवउलू।

बड़ी—का कहीं—दुई दिन से हड़ताल हौ—हवन पूजन सामान कहीं नाही मिलल—माँग जाँच के थोड़ा सामान जुटउले हई। छोटकी पंडित का कहलेस।

छोटी—जीजी, भुल्लन के भेजले रहली—तो ऊ कहलन कि नगर की स्थिति ठीक नहीं है, राजा महल में बंद है, मलिच्छों की सेना सड़क पर चक्कर लगा रही है—घनचक्कर हूँ कि चौखट से बाहर पैर रक्खूं—और कह देना सावजी से कि जान साँसत में डाल कर जाऊँ भी तो 'सीधा' डेढ़ दमड़ी का ही मिलेगा।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ

प्रो० कुसुमलता केडिया व प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र

आकार डिमाई

प्रकार सजिल्द व अजिल्द

पृष्ठ 192

ISBN : 978-81-7124-680-9 • मूल्य : रु० 180.00

ISBN : 978-81-7124-681-6 • मूल्य : रु० 120.00

''यह पुस्तक बताती है : यूरोप में कैथोलिकों एवं प्रोटेस्टेन्टों ने पाँच सौ शताब्दियों तक करोड़ों निर्दोष, सदाचारिणी, भावमयी श्रेष्ठ स्त्रियों को डायनें और चुड़ैल घोषित कर जिन्दा जलाया, खौलते कड़ाहों में उबाला, पानी में डुबो कर मारा, बीच से जिन्दा चीरा, घोड़े की पूंछ में बँधवा कर सड़कों-गलियों में इस प्रकार दौड़ाया कि बँधी हुई स्त्री लहूलुहान होकर दम ही तोड़ दे!''

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

स्त्री की हीनता का पैगाम लेकर आया ख्रीस्तपंथ

''पादरी ऑगस्टीन ने पश्चिमी ख्रीस्तसमाज के मानस पर 'पाप' का एक प्रचण्ड आतंक भर दिया। वह 'पाप' (यानी सेक्स) एक भीषण तथा अदम्य ऊर्जा था, बल और वेग था। अत: इस भाव के कारण, ख्रीस्तपंथ के हर सिद्धांत-प्रतिपादन की जड़ में है—स्त्री यानी ईव। यह 'ईव' (स्त्री) ही 'ईविल' का स्रोत है, हर तरह के दु:ख का 'कारण' है, अपराध-बोध का दुस्सह भार इसी के कारण तो है। यही तो है जिसके कारण मनुष्य 'पाप' से जल रहा है। पाप, सेक्स और स्त्री—ये एक ही अपवित्र, पापमय सत्ता की परस्पर संगुम्फित त्रिमूर्ति हैं।'' इसी त्रिमूर्ति की टक्कर में इन पादरियों ने जीसस, ख्रीस्तपंथ और चर्च की त्रिमूर्ति (ट्रिनिटी) खड़ी की है। (पाप का जवाब है जीसस, सेक्स का जवाब है ख्रीस्तपंथ और स्त्री का जवाब है चर्च।)

पश्चिमी ख्रीस्तपंथी पुरुषों के लिए स्त्री सदा ही 'ईव' है, मनुष्य को पतन के गर्त्त में ढकेल रही लुभावनी सत्ता। अन्य संस्कृतियों में स्त्री का माँ बनना, संतति-जन्म, स्त्री की शक्ति एवं गौरव का शिखर है, परन्तु ख्रीस्तपंथ में और उससे प्रभावित पश्चिमी संस्कृति में, बच्चे को जन्म देना पाप का प्रसार करना माना जाता रहा है। संतान को जन्म देकर औरत पाप को फैलाती है। वह अगली पीढ़ी को इस प्रकार पाप हस्तांतरित करती है तथा इस तरह पाप का प्रसार करती है। इस तरह अपराध-बोध ख्रीस्तपंथ में स्त्री के स्त्रीत्व का अभिन्न अंग बन चुका है। वह सदा किसी न किसी अपराध-बोध का अनुभव करती रहती है, उसी में लोटपोट करती है या फिर नए-नए अपराध-बोध खुद भी सिरजती रहती है। कोई आधुनिक स्त्री इस अपराध-बोध से भरी मिलेगी कि मुक्ति के इस दौर में भी वह घर में ही है, माँ और पत्नी की भूमिका तक सीमित; तो कोई आधुनिक स्त्री दफ्तरों-कारखानों में काम करते समय इस अपराध-बोध से भरी होगी कि बच्चे के साथ वह ज्यादती कर रही है उसे भरपूर समय न देकर या फिर यह कि बच्चे का ध्यान बार-बार आता है, इसलिए वह अपने काम के साथ (दफ्तर या कारखाने में) न्याय नहीं कर पा रही है। कुल मिलाकर आधुनिक ख्रीस्तपंथी प्रभावों वाली स्त्री अपराध-बोध से मुक्त नहीं हो पाती। यह अपराध-बोध वस्तुत: उसमें ख्रीस्तपंथ की इस मान्यता का ही संचित प्रभाव है कि स्त्री स्वयं में ईविल है, पाप का स्रोत है, कारण है।

इस तरह ख्रीस्तपंथी आधुनिक समाज में अपराध बोध के साथ जीना स्त्री की सामान्य अवस्था है। ''आधुनिक मनोविज्ञान और शिशुरक्षण सम्बन्धी पुस्तकें यही तो बताती हैं कि यदि बच्चा 'न्यूरोटिक' है तो यह तो मां की ही गलती के कारण है। बेटियों में भी मातायें शर्म भरती रहती हैं। 'सोशल गैदरिंग्स' और ऑफिस तक में स्त्रियाँ फट से अपने को ही जिम्मेदार ठहराने लगती हैं यदि कुछ गड़बड़ हो जाय, यह मानकर कि वैसा उनकी ही किसी गलती के कारण हुआ होगा। इसी मानस के कारण पुरुष भी इन्हीं भावों को पोसते रहते हैं। अपनी कमियों की जिम्मेदारी वे परोक्षत: किसी न किसी स्त्री पर डालते रहते हैं। यदि वे 'अपसेट' हैं तो इसका कारण है कि उनकी पत्नी या प्रेमिका ने उन्हें चोट पहुँचायी है, और यदि ऐसा नहीं भी हुआ है, पुरुष फिर भी 'अपसेट' है—एकदम अन्य कारण से, जिसका स्त्री से दूर-दराज का भी ताल्लुक नहीं तो भी किसी न किसी तरह, दोनों को यही विश्वास होगा कि यह स्त्री की ही भूल है। औरतें जिन्दगी बिता देती हैं भूल-चूक की ऐसी माफी मांगते-माँगते, झेंपते-झेंपते जैसा पुरुष कभी नहीं करते। हमें सिखाया जाता है कि हम 'एसर्टिव' न हों, आलोचनाएँ सह लें तथा अपनी सक्रिय उपस्थिति को लेकर क्षमा याचना का भाव रखें। या तो कहें कि 'सॉरी, मैंने आपको डिस्टर्ब किया'....'सॉरी, मैने इस बात पर जिद किया'.... 'सॉरी, मैंने आपको कह दिया कि आपका काम फूहड़ है' आदि; या फिर, 'सॉरी' कहने का यह ढंग महज शारीरिक भाव-भंगिमा से हो सकता है या कि झेंप भरी हँसी/क्षमायाचक हँसी से। हम अपनी परिभाषा ही गुनाह की पदावली में करती हैं और हमारा यह गुनाह-भाव हमारी हीनता को कई गुना बढ़ा देता है। नहीं तो कस्बे की औसत औरत जो वास्तविक शक्ति एवं प्रभाव से वंचित है, भला कैसे पति और बच्चों के भले-बुरे की पूरी तरह उत्तरदायी हो सकती है ? कैसे उन लोगों की जीवनभर की असफलताओं का कारण 'उसकी' भूल (fault) हो सकती है? जब समाज ने उसे शक्ति के स्रोतों से पूरी तरह दूर रखा है तब भला कहाँ से और कैसे वह आफत ढोने की ताकत पा जाती है ? हम पश्चिमी (ख्रीस्तपंथी) आधुनिक स्त्रियों को उत्तर तो पता है लेकिन उलझे ढंग से; कुछ 'कन्फ्यूज्ड' रूप में। हम जानती हैं कि हम 'ईव' हैं, गुनहगार और इसलिए हर गलती के लिए हम ही जिम्मेदार हैं।''

''जब ख्रीस्तपंथ मध्य और उत्तर यूरोप में पहुँचा, तब जर्मन लोग ऑगस्टीन के उपदेशों एवं प्रवचनों को सुनने के मूड में नहीं थे। तब का यूरोपीय समाज 'सेलीबेसी' जैसे प्रलापों और उसके भयंकर कुतर्कों और सैद्धान्तिक मायाजाल से बाहर था। सेंट बोनीफेस बहुत नाराज है आठवीं सदी के इंङ्गलैण्ड से। गिल्डास और एल्विन जैसे चर्च के इतिहासकार जो वर्णन करते हैं इस समाज का, वह तो यही बताता है कि इस यूरोपीय समाज का न तो बौद्धिक वातावरण ख्रीस्तपंथ के अनुकूल है और न ही काम संबंधी धारणाएँ। किसानों के लिए जीवन दारुण है, अकाल और भुखमरी सदा उपस्थित है, मृत्युदर ऊँची है। वहाँ की प्रथायें भिन्न हैं किन्तु चर्च यह सब बदल डालता है 11वीं सदी तक। अब यहाँ केवल ख्रीस्त मान्यताओं का ही बोलबाला है। शर्म, गुनाह, काम, दु:ख और मृत्यु का यह ऑगस्टिनियन भाव यूरोपीय मानस में क्रमश: गहरे तक पैठ गया। ऑगस्टीन, टर्टुलीयन, जेरोम जैसे सेंट, पादरियों और चर्च के पिताओं के ख्रीस्तपंथी प्रवचन (या प्रलाप) ख्रीस्तपंथी उन्माद के प्रसार के साथ-साथ पूरे समाज में फैल गये। यद्यपि एक लम्बे समय तक यूरोपीय समाज की अपनी मूल मान्यताएँ (जिन्हें चर्च 'पैगन' मान्यता कहता है) भी साथ-साथ चलती रहीं और एक अजीब सा घालमेल रहा। तथाकथित सुधार के सोलहवीं शताब्दी के दौर में ये 'पैगन' मान्यताएँ बर्बर दमनतंत्र द्वारा साफ कर दी गयीं। अन्तत: ख्रीस्तपंथ यूरोप में फैला और साथ में ही फैला उसका काम-विरोध तथा नारी-द्वेष।....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

'तुलसी रामायण इन इंग्लिश वर्जन'

नई दिल्ली। फ्लोरिडा निवासी प्रवासी भारतीय सत्यदेव ने तुलसीदासकृत रामचरिमानस का अंग्रेजी में रूपान्तरण कर उसे प्रकाशित कराया है। इस रूपान्तरण की विशेषता यह भी है कि अंग्रेजी में रूपान्तरित चौपाई—चौपाई की तरह और छंद—छंद की तरह लगते हैं और वे भली-भाँति गेय हैं। इस रूपान्तरण में मूल रामायण की आत्मा पूरी तरह सुरक्षित है।

हिन्दी पढ़ने से सक्रिय होता है मस्तिष्क

नई दिल्ली के राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केन्द्र के विज्ञान पत्रिका 'करंट साइंस' में प्रकाशित अनुसंधान का कहना है कि अंग्रेजी पढ़ते समय दिमाग का सिर्फ बायाँ हिस्सा सक्रिय रहता है जबकि हिन्दी पढ़ते समय मस्तिष्क का दाहिना और बायाँ दोनों हिस्सा सक्रिय हो जाता है। इससे दिमाग तरोताजा रहता है। ऐसा इसलिए होता है कि हिन्दी के शब्दों में ऊपर, नीचे और दाएँ-बाएँ लगी मात्राओं के कारण दिमाग को इसे पढ़ने में अधिक कसरत करनी पड़ती है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में 2011-2012 का फुलब्राईट—नेहरू फेलोशिप

अमेरिका-भारत शैक्षणिक फाउंडेशन (यूएसआईईएफ) कॉलेज / विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों, नीति योजनाकारों, प्रशासकों तथा पेशेवरों सहित भारत में रहने वाले भारतीय नागरिकों से फुलब्राईट-नेहरू तथा अन्य फेलोशिप हेतु आवेदन आमन्त्रित करता है। सम्पर्क के लिए ip@usief.org पर ई-मेल करें।

पुरा-पाण्डुलिपियों का केन्द्र : गुजरात

एक जानकारी के अनुसार केवल गुजरात में ही प्राचीन-पाण्डुलिपियों का भण्डार है 50 लाख। जिनमें से 15 लाख विभिन्न सरकारी संस्थानों में, 25 लाख निजी संग्राहकों के व्यक्तिगत संग्रह में एवं 10 लाख जैन-सम्प्रदाय के मन्दिरों-संस्थानों की अमूल्य धरोहर हैं। भ्रमणशील जैन मुनियों ने भी विभिन्न प्रान्तों से पाण्डुलिपि एकत्र करने का कार्य किया है। ये पाण्डुलिपियाँ संस्कृत, प्राकृत, मागधी, अर्धमागधी, पुरानी गुजराती, राजस्थानी और हिन्दी में लिखी गयी हैं। तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ भाषा में लिखित पाण्डुलिपियाँ ताल-पत्र या भोजपत्र पर लिखी गयी हैं। ये सभी ग्रन्थ 400 से 700 वर्ष प्राचीन हैं। 'एल०डी० इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी' में पाण्डुलिपि विभाग की प्रभारी सुश्री प्रीति पंचोली के अनुसार उन्हें राष्ट्रीय-पाण्डुलिपि-मिशन योजना के अन्तर्गत गुजरात में खोज का दायित्व दिया गया था। इस कार्य को करते हुए उन्होंने गुजरात के राजकीय संग्रहालय और व्यक्ति-संग्राहकों के पास संरक्षित 2 लाख पाण्डुलिपियों को चिह्नित किया है, और खोज जारी है। इसी संस्थान के निदेशक श्री जीतू शाह ने बताया कि इन पाण्डुलिपियों के अध्ययन का कार्य भी जारी है ताकि इतिहास के सम्यक् अनुसंधान में इनका उपयोग किया जा सके।

महाभारत सुनाएगा सुपरमैन का लेखक

'ऑल स्टार सुपरमेन', 'बैटमैन एंड रॉबिन' और 'इनबिजिब्लस' जैसी लोकप्रिय कॉमिक्स के लेखक ग्रांट मॉरिसन की अगली कृति भारतीय महाकाव्य महाभारत पर आधारित होगी। मॉरिसन की महाभारत पर आधारित पुस्तक अमेरिकी बाजार में अगस्त में दस्तक देगी। पुस्तक का प्रकाशन 'डायनामाइट एंटरटेनमेंट' और 'लिक्विड कॉमिक्स' करेगी। 'ग्रांट मॉरिसनन्स 18 डेज' नामक पुस्तक महाभारत की कहानी पर आधारित होगी, जिसमें तीन पीढ़ियों के महायोद्धाओं की कहानी बताई जाएगी। पुस्तक के प्रकाशक का कहना है कि आगामी किताब लोगों को चेतावनी देगी कि कोई भी युद्ध जिन्दगी को बदल देता है।

मोहम्मद साहब पर टिप्पणी वाली दो किताबें प्रतिबन्धित

लखनऊ। सरकार ने मनिंद्र नाथ सिन्हा की किताब 'कारलाइल्स द हीरो ऐज पोइट' और डॉ० एस०डी० शर्मा 'संदल' की पुस्तक 'केके डाइजेस्ट इंग्लिश लिटरेचर, प्रोज फर्स्ट पेपर फार एम०ए० (प्रीवियस) स्टूडेंड' पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।

इन किताबों में पैगम्बर हजरत मोहम्मद के विरुद्ध अपमानजनक टिप्पणी की गई है। गृह विभाग के आदेश में कहा गया है कि इन किताबों के प्रकाशन से इसलाम धर्म को मानने वाले लोगों की धार्मिक भावनाएँ आहत हो रही है। इनमें से 'कारलाइल्स द हीरो ऐज पोइट' का प्रकाशन प्रकाश बुक डिपो बरेली से और संदल की पुस्तक का प्रकाशन अंजना प्रकाशन मन्दिर अस्पताल रोड आगरा से किया गया है।

काशी नगरी में तैयार हो रहा साहित्य के शिव का रचना समग्र

इसे इतिहास का पुनरावृत्त होना ही कहेंगे कि जिस काशी में बैठकर 'हिन्दी साहित्य के शिव' कहे जाने वाले बाबू शिवपूजन सहाय ने एक से एक अमर कृतियों का सम्पादन-कार्य किया था, वहीं कोई आठ दशक बाद आज स्वयं उनकी रचनाओं और उनसे जुड़े तमाम साहित्यिक सन्दर्भों को 'शिवपूजन सहाय समग्र' के नाम से अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

'समग्र' को अन्तिम रूप देने में जुटे प्रो० मंगलमूर्ति बताते हैं कि यह ग्रन्थावली अब तक प्रकाशित तमाम रचनावलियों से इस मायने में भिन्न होगी क्योंकि इसमें केवल शिवजी से सम्बन्धित ही नहीं बल्कि द्विवेदीयुगीन व उत्तर द्विवेदीयुगीन ऐसे तमाम साहित्यकारों की दुर्लभ व अब तक अप्रकाशित तस्वीरें व उनसे जुड़ी सामग्री होगी, जो शिवजी के सम्पर्क में आए थे। 'समग्र' स्वाभाविक रूप से प्रदीर्घ यानी दस खण्डों में होगा।

भारत सरकार ने सन् 1960 में बाबू शिवपूजन सहाय को 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया था। उनके निधन के पैंतीस वर्षों बाद 1998 में केन्द्रीय संचार मन्त्रालय ने उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया जबकि इससे पहले फिल्म डिवीजन बम्बई व दूरदर्शन दिल्ली ने उनके जीवन और साहित्य पर केन्द्रित चार वृत्त-चित्र भी निर्मित और प्रसारित किए।

बोलती किताबें

कभी-कभी हम सोचते होंगे कि काश दादी-नानी की कहानियाँ फिर सुनने को मिलतीं, तो कितना अच्छा होता। हमें कोई जिन्न, जादुई चिराग, परियों और बहादुर राजकुमारों की कहानियाँ सुनाता और हम सुनते-सुनते सो जाते। तो समझ लीजिए कि हमारी यह मुराद पूरी हो गई। www.BooksShouldBeFree.com एक ऐसी ही वेबसाइट है, जहाँ से हम अपनी मनपसंद किताबें एमपी3 फॉर्मेट में डाउनलोड कर सकते हैं। ऑडियो बुक्स का खजाना है इस वेबसाइट पर। इस वेबसाइट पर एडवेंचर, फंतासी, फेयरी टेल्स, हिस्ट्री, साइंस फिक्शन और कॉमेडी बुक्स की खासी रेंज मौजुद है और वह भी फ्री में। इस वेबसाइट पर एक हजार से ज्यादा बुक्स हैं, जो एमपी3 और आईट्यूंस फॉर्मेट में हैं। साथ ही गुलीवर ट्रेवेल्स, एलिस एडवेंचर्स इन वंडरलैंड, द लॉस्ट वर्ल्ड, टार्जन ऑफ द एप्स और शेरलॉक होम्स जैसी फेमस बुक्स भी मौजूद हैं। साथ ही वेबसाइट पर हर किताब की जानकारी के साथ-साथ समीक्षा भी दी गई है। इसके अलावा एमपी3 बुक्स में वॉयस ओवर भी बेहतरीन है। एमपी3 बुक्स को मोबाइल या एमपी3 प्लेयर पर ट्रांसफर करके भी सुना जा सकता है। तो दोस्तों, अब हम भी बिना पढ़े लेटे-लेटे कहानियों का लुत्फ उठा सकते हैं। हालाँकि ये आडियो बुक्स दादी और नानी तो नहीं बन सकतीं, लेकिन उनकी कमी को काफी हद तक पूरा कर सकती हैं।

संस्कृतियों के उत्थान-पतन में पुस्तकों का विशेष महत्त्व रहा है। शब्द युगान्तरकारी होते हैं।

स्मृति-शेष

कथाकार मार्कण्डेय नहीं रहे

मुंशी प्रेमचंद की विरासत को सहेजने व संवारने वाले नई कहानी के पुरोधा प्रख्यात कथाकार मार्कण्डेय का निधन दिल्ली में हो गया। वे 80 वर्ष के थे। वे पिछले काफी दिनों से कैंसर से पीड़ित थे।

उनकी पहली कहानी 'गुलरा के बाबा' चर्चित हुई। अपने अन्तिम समय में भी 'कथा' जैसी चर्चित पत्रिका का सम्पादन करते रहे। उनके चर्चित उपन्यासों में 'अग्निबीज', 'सेमल के फूल' रहे। इसके अतिरिक्त 'सपने तुम्हारे थे' (कविता संग्रह), 'पत्थर परछाइयाँ' एकांकियों का संग्रह शामिल है। 'कहानी की बात' उनका चर्चित आलोचनात्मक ग्रन्थ है।

मराठी कवि विंदा ने ली दुनिया से विदा

मुंबई में जाने माने मराठी कवि गोविंद विनायक करंदीकर का संक्षिप्त बीमारी के बाद 14 मार्च को निधन हो गया। वह 92 वर्ष के थे। वह 'विंदा' करंदीकर के नाम से विख्यात थे। वर्ष 2003 के लिए 2006 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किये गए करंदीकर भारतीय कविता-जगत के आधुनिक कवियों में से एक थे। उन्हें केशवसूत पुस्कार, सोवियत लैंड नेहरू साहित्य पुरस्कार और कबीर सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें साहित्य अकादमी की प्रतिष्ठित फैलोशिप भी मिली थी।

विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक' का निधन

हिन्दी साहित्य के उद्भट् विद्वान् प्रो० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित के अग्रज, वयोवृद्ध स्वतन्त्रता-सेनानी, पत्रकार, आलोचक, बहुमुखी रचनाकार श्री विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक' का साहिबाबाद में निधन हो गया। वे 92 वर्ष के थे। वे सन् 1935 से साहित्य-रचना और पत्रकारिता से जुड़े और गाँधीजी के सत्याग्रह के अलावा अध्यापन, आकाशवाणी की सेवा, प्रकाशन संस्थान के निदेशक आदि विभिन्न दायित्वों का निर्वाह करते हुए अंत तक साहित्य-साधना करते रहे। उनकी 36 पुस्तकें प्रकाशित और 15 प्रकाश्य हैं।

डॉ० संसार चंद्र का निधन

चंडीगढ़ में प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ० संसार चंद्र का 5 फरवरी को देहांत हो गया। वे 83 वर्ष के थे। उन्हें महाराष्ट्र सरकार ने चकल्लस अवार्ड, पंजाब सरकार की ओर से शिरोमणि साहित्यकार अवार्ड तथा हरियाणा सरकार की ओर से साहित्यरत्न अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका था। उनका जन्म 28 अगस्त, 1917 को पाक अधिकृत कश्मीर के एक नगर मीरपुर में हुआ था।

...ओ इंतजार था, जिसका ये वो सहर तो नहीं

ये दाग-दाग उजाला, ये सब गुजीदा सहर। ओ इंतजार था, जिसका ये वो सहर तो नहीं। उक्त पंक्तियाँ अग्नि बीज उपन्यास में मार्कण्डेय सिंह ने लिखी थीं। उनके बारे में भदवार गाँव निवासी हिमाचल विश्वविद्यालय के कुलपति रहे हिन्दी के समालोचक डॉ० बच्चन सिंह की धारणा थी कि मार्कण्डेय मार्क्सवादी विचारधारा के कहानीकार हैं।

मार्कण्डेय सिंह केराकत तहसील के बराई गांव में तालुकदार सिंह के घर दो मई 1930 को पैदा हुए थे। बचपन की शिक्षा बराई गाँव में हुई। उन्होंने हाई स्कूल व इण्टर की शिक्षा प्रताप बहादुर इण्टर कालेज प्रतापगढ़ में पूरी की। मार्कण्डेय सिंह इण्टरमीडिएट की परीक्षा देने के बाद 1948 में स्नातक की शिक्षा के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय गए। मार्कण्डेय सिंह ने 1952-53 में परास्नातक किया। इसी दौरान मार्कण्डेय सिंह की पहली कहानी पानफूल प्रकाशित हुई। 1969 में कथा पत्रिका के सम्पादक रहे। कथा पत्रिका का अनुवाद रुसी, जापानी, अंग्रेजी, जर्मनी आदि भाषाओं में किया गया। मार्कण्डेय सिंह ने माया पत्रिका के महाविशेषांक का सम्पादन भी किया था। वे कल्पना पत्रिका में समीक्षा चक्रधर के नाम से लिखते रहे।

ग्रामीण परिवेश को चित्रित करने वाले कथाकार के रूप में ख्यात साहित्यकार मार्कण्डेय एक माह पूर्व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान संस्थान में गले के कैंसर का उपचार कराने के लिए भरती हुए थे।

जब गले का कैंसर फेफड़े तक फैल जाने की जानकारी हुई तो वे दिल्ली चले गए। आजादी के बाद जो नया कथा परिदृश्य उभर कर आया उसमें इनकी पहचान ग्रामीण कथाकार के रूप में बनी। प्रखर कथाकार होने के साथ ही प्रखर समीक्षक भी थे। उनकी कहानियों बासवी की माँ एवं नौ सौ रुपये और एक ऊंट दाना में बनारस को प्रमुखता से स्थान मिला है। इन कहानियों में बनारस की संस्कृति जीवंत प्रतीत होती है।

'गुलरा के बाबा' से शुरू हुए सफर के बाद मार्कण्डेय ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कथा लेखन और आलोचना के साथ साहित्य की अन्य विधाओं पर भी समान रूप से रचते हुए तमाम उपलब्धियाँ अपने खाते में दर्ज कराईं। इस बीच एक बार गम्भीर हृदयाघात तो दूसरी बार कैंसर ने भी उनकी जिन्दगी में दस्तक दी, पर अद्भुत जिजीविषा के धनी मार्कण्डेय ने दोनों ही बार दोनों को करारी मात दी। बीमारी से उठे तो 'कथा' का सफर दोबारा शुरू हो गया। वस्तुत: वह जीवन भर अपनी माटी, अपने लोगों से जुड़कर लोकजीवन के विविध अनछुए पहलुओं को बयां करते हुए उन प्रतीकों, सरोकारों को नए अर्थ देते रहे जिनसे आम आदमी की पहचान जुड़ी है। अभी उन्हें कई अधूरे काम पूरे करने थे, जिसमें उपन्यास 'अग्निबीज' के दूसरे खण्ड सहित मसीही मशीनरी के क्रियाकलापों पर आधारित उपन्यास डॉ० पॉल भी शामिल है। इसी तरह अप्रकाशित कविताओं का दूसरा संग्रह और कथा संग्रह 'हलयोग' को भी प्रकाशन की अंतहीन प्रतीक्षा रहेगी। मार्कण्डेय को बीते दिनों जब इटावा हिन्दी सेवी सम्मान दिया गया तो बोले, ''मेरे लिए सम्मान रचनाकर्म की संजीवनी है, पर लक्ष्य नहीं। मेरा मानना है कि सम्मान में धनराशि उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं, जितना यह कि उसे किसने और किन उद्देश्यों के लिए दिया।''

कृतियाँ

प्रमुख कहानियाँ : बीच के लोग, हलयोग, हंसा जाई अकेला, महुए का पेड़, गुलरा के बाबा, भूदान, पत्थर, तारों का गुच्छा, परछाई आदि।

उपन्यास : अग्नि बीज, सेमल के फूल। **काव्य संग्रह :** सपने तुम्हारे। **एकांकी संग्रह :** पत्थर और परछाइयाँ।

पुरस्कार

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का साहित्य भूषण, पश्चिम बंगाल का राहुल सांकृत्यायन और मध्य प्रदेश का वनमाली सम्मान।

वैचारिक स्वतन्त्रता के तरफदार थे मार्कण्डेय—मैनेजर पाण्डेय

प्रेमचंद के बाद ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़ी कहानियों को सामने लाने का काम फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय और शिवप्रसाद सिंह ने किया। अपने से छोटों की बात रखने का पूरा मौका देना और उनकी अच्छी बात पर आगे बढ़कर शाबासी देना मार्कण्डेय की विशेषताओं में शामिल था। उभरते कथाकारों को मंच दिलाने के लिये भी उन्होंने प्रयास किया। मार्कण्डेय की कृतियों का पुनर्मूल्यांकन करना होगा। सच कहा जाए तो वह वैचारिक स्वतन्त्रता के समर्थक थे। उक्त बातें वरिष्ठ आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने अपने 30 वर्षों के कथाकार साथी मार्कण्डेय की स्मृति में महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद के क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित स्मृति सभा में व्यक्त किए। इलाहाबाद की कथात्रयी अमरकांत, मार्कण्डेय, शेखर जोशी के बीच की एक कड़ी का टूटना, वरिष्ठ कथाकार शेखर जोशी की संवेदना में अपने साथी के बिछड़ने का दर्द शामिल था।

कवयित्री सरस्वती डालमिया का निधन

अग्रणी उद्योगपति स्व० श्री रामकृष्ण डालमिया की पत्नी श्रीमती सरस्वती डालमिया का 94 साल की उम्र में निधन हो गया। श्रीमती डालमिया कवयित्री, लेखिका और हिन्दी व संस्कृत साहित्य की विद्वान् थीं। वर्ष 2007 में छपी उनकी पुस्तक 'निराजना' बड़ी चर्चित रही। इन्होंने उस वक्त अपना स्नातक पूरा किया जब महिलाओं के लिए शिक्षा बहुत आम बात नहीं थी।

प्रकाशक श्री जगदीश भारद्वाज नहीं रहे

18 मार्च को वरिष्ठ प्रकाशक एवं सामयिक प्रकाशन के संस्थापक श्री जगदीश भारद्वाज का दिल्ली में निधन हो गया। वह पिछले कुछ दिनों से बीमार थे। 14 मार्च, 1935 को मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में जनमे श्री भारद्वाज ने 1970 में सामयिक प्रकाशन की स्थापना की। वह छह वर्ष तक अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के महासचिव तथा दो वर्ष तक उपाध्यक्ष रहे। उनके परिवार में तीन पुत्र और एक पुत्री हैं। प्रकाशन जगत् में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा और दिल्ली सरकार द्वारा सम्मानित किया गया था।

इतिहासकार प्रो० विजय पाण्डेय नहीं रहे

डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो० विजय कुमार पाण्डेय का निधन 23 मार्च को हो गया। वह काशी विद्यापीठ वाराणसी, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की कार्यपरिषद में राज्यपाल के नामित सदस्य रहे।

जाने-माने शिक्षाविद् डॉ० राजनाथ सिंह का निधन

वाराणसी। उदय प्रताप कॉलेज के पूर्व प्राचार्य और पूर्व एम०एल०सी० डॉ० राजनाथ सिंह (95) का 21 मार्च को लखनऊ में निधन हो गया। डॉ० सिंह दो टर्म तक कॉलेज के प्राचार्य रहे। आप उदयपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

हिन्दी की वरिष्ठ लेखिका डॉ० कमला दीक्षित का निधन

विगत 3 जनवरी 2010 को हिन्दी साहित्य की वरिष्ठ लेखिका, हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् प्रो० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित की धर्मपत्नी डॉ० कमला दीक्षित का निधन हो गया। वे गोरखपुर के गवर्न्मेण्ट गर्ल्स हाई स्कूल तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्रवक्ता रह चुकी थीं। उनके कुछ लेख, आकाशवाणी वार्ताएँ और एक पुस्तक 'मराठी लोक कथाएँ' (राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली) प्रकाशित हैं।

सम्मान-पुरस्कार

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार

साहित्य अकादेमी ने वर्ष 2009 के साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार के लिए 23 भारतीय भाषाओं की अनूदित कृतियों की घोषणा की है। **भालचंद्र जयशेट्टी** को अनूदित कृति 'काव्यार्थ चिंतन' और उर्दू के लिए **आस्मा सलीम** को उनकी कृति 'सफर' के लिए प्रदान किया जाएगा। *अनुवाद पुरस्कार* के लिए चयनित कृतियों में 'लोकायत दर्शन' (असमिया / जतीन्द्र कुमार बारगोहाई), 'मित्रो मरजानी' (बांग्ला / उज्जवल सिंह), 'मोसोउ दान' ((बोडो / गोविंद नार्जारि), 'अग्गा गोआह' (डोगरी / ओम गोस्वामी), 'हरिलाल गांधी : ए लाइफ' (अंग्रेजी / त्रिदीप सुहद), 'जलगीत' (गुजराती / रमणीक सोमेश्वर), 'भीष्म साहनीयवर प्रतिनिधिक कथेगलु' (कन्नड़ / डी०एन० श्रीनाथ), 'अन्हड़ ते आकाश' (कश्मीरी / शाद रमजान), 'अधिकार अरणयाचो' (कोंकणी / कस्तूरी देसाई), 'बीछल बेरायल मराठी एकांकी' (मैथिली / भालचंद्र झा), 'हृदयतिण्डेस्वरम' (मलयालम / के० राधाकृष्ण वारियर) व *मराठी के लिए* **वीणा अलासे** को उनकी अनूदित कृति 'तीन आत्मकथा' के अलावा *नेपाली भाषा में अनुवाद के लिए* **आमनारायण गुप्ता** को उनकी कृति 'ह्यवदन', *उड़िया भाषा के लिए* **धरणीधर पाणिग्रही** को उनकी कृति 'करण सिंह : आत्मजीवनी', *पंजाबी के लिए* **शाह चमन** को उनकी कृति 'करबला' के लिए, *राजस्थानी के लिए* **अर्जुन सिंह** को उनकी अनूदित कृति 'वन र वारिस' के लिए, *संस्कृत के लिए* **स्व० प्रेमनारायण द्विवेदी** को उनकी अनूदित कृति 'श्रीरामचरितमानसम्' के लिए, *सिंधी के लिए* **झामू छगनी** को उनकी कृति 'श्रीराधा' के लिए, *तमिल भाषा में अनुवाद के लिए* **भुवन नटराजन** को उनकी कृति 'मुतल सबतम', *तेलुगु के लिए* **प्रभाकर मंदार** को उनकी अनूदित कृति 'दलित उद्यम चरित्र' के लिए दिया जाएगा।

जीतेन्द्र वर्मा को विद्यापति पुरस्कार

वर्ष 2009 का विद्यापति साहित्य पुरस्कार युवा लेखक जीतेन्द्र कुमार वर्मा को दिया गया। पटना में आयोजित पुस्तक मेले में यह पुरस्कार एक समारोह में प्रसिद्ध कथाकार चित्रा मुद्गल ने प्रदान किया।

डॉ० इन्द्र सेंगर सम्मानित

21 फरवरी को खटीमा (उत्तराखण्ड) में बाल कल्याण संस्थान द्वारा आयोजित इण्डो-नेपाल बाल साहित्य सम्मेलन 2010 में डॉ० इन्द्र सेंगर को उनकी बाल साहित्य सृजन की श्रेष्ठ सेवाओं के लिए 'बाल साहित्य गौरव-2010' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उत्तराखण्ड के मुख्य सूचना आयुक्त डॉ० तौलिया के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया। इसी क्रम में जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर में आयोजित एक साहित्य सम्मेलन में डॉ० शिवशंकर कटारे अभिनन्दन ग्रन्थ समिति की ओर से भी डॉ० इन्द्र सेंगर को हिन्दी साहित्य के विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'भदावर भारती सम्मान' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान महाराजा मान सिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर के कुलपति पं० चितरंजन ज्योतिषी के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

कुँवर नारायण और भूलाभाई देसाई को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता

साहित्य अकादेमी द्वारा वरिष्ठ कवि कुँवर नारायण और गुजराती लेखक प्रो० भूलाभाई देसाई को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता के लिए चुना गया है। महत्तर सदस्यता साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान है।

बहादुरशाह जफर सम्मान

दिल्ली सचिवालय में उर्दू अकादमी द्वारा आयोजित वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने वर्ष 2008 का बहादुरशाह जफर एवार्ड प्रो० साजिदा जैदी और प्रो० जाहिदा जैदी को संयुक्त रूप से प्रदान किया।

डॉ० शिवनारायण को 'भारतीय भाषा रत्न'

पटना में सुप्रतिष्ठित कवि और 'नई धारा' के सम्पादक डॉ० शिवनारायण को विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर ने अपने शिखर सम्मान 'भारतीय भाषा रत्न' की मानसेवी उपाधि से विभूषित किया है।

सुदीप बनर्जी और विष्णु खरे को भवभूति अलंकरण

भोपाल में मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा वनमाली सृजनपीठ के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय 15वाँ भवभूति अलंकरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह की पहली शाम स्मृतिशेष कवि सुदीप बनर्जी के काव्य अवदान पर केन्द्रित रही। उन्हें सन् 2008 का भवभूति अलंकरण प्रदान किया गया जिसे उनके पुत्र गौरव बनर्जी ने ग्रहण किया। समारोह की अध्यक्षता प्रो० अक्षय कुमार जैन ने की। इस अवसर पर स्व० सुदीप बनर्जी की काव्यकृति 'उसे लौट आना चाहिए' उनके रचना कर्म पर सम्पादित पुस्तक 'आसमान का समकालीन' और विष्णु खरे द्वारा सम्पादित 'जीवन के वे सभी प्रश्न कमोबेश' किताबों का लोकार्पण किया गया।

दूसरे दिन की शाम विष्णु खरे को केदारनाथ सिंह और श्री देवताले ने 'भवभूति' अलंकरण से

सम्मानित किया। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री केदारनाथ सिंह ने नाटकीयता से ओतप्रोत विष्णु खरे की कविताओं को एक बड़ी उपलब्धि बतलाया।

डॉ० अकेलाभाइ को 'विद्यावाचस्पति'

शिलांग के डोकानिया धर्मशाला में आयोजित भागलपुर विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ द्वारा अपने 14वें महाधिवेशन में पूर्वोत्तर भारत के हिन्दीसेवी डॉ० अकेलाभाइ को विद्यावाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया गया। डॉ० अकेलाभाइ पूर्वोत्तर हिन्दी अकादेमी के संस्थापक हैं।

महाराणा मेवाड़ के अलंकरण

उदयपुर के महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउंडेशन ने वर्ष 2010 के अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय अलंकरण घोषित कर दिए हैं। पत्रकार संजीव श्रीवास्तव को हल्दीघाटी अलंकरण और फिल्म अभिनेत्री नंदिता दास को हकीम खाँ सूर अलंकरण दिया जाएगा।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिया जाने वाला कर्नल जेम्स टॉड अलंकरण ब्रिटिश मूल के समाजसेवी सर गुलाम नून और ब्रिटिश लाइब्रेरी के अध्यक्ष सर कॉलिन लुकास को दिया जाएगा। भू-वैज्ञानिक डॉ० शैलेष नायक को महाराणा उदयसिंह तथा समाजसेवी पद्मश्री और प्रो० शांता सिन्हा को पन्ना धाय अलंकरण प्रदान किया जाएगा।

वर्तमान साहित्य : पुरस्कार-समारोह सम्पन्न

''आज हिन्दी कथा-साहित्य में बदलते हुए समाज का प्रभाव स्पष्ट दिखायी दे रहा है। साहित्य सार्थक हस्तक्षेप करता है और सामाजिक प्रवृत्तियों को प्रभावित भी करता है और प्रतिरोध की शक्ति भी पैदा करता है। तुलसीदास ने आम लोगों की अवधी भाषा में रामकथा लिखकर विशिष्ट वर्ग के साहित्य की भाषा के वर्चस्व का विरोध किया और लोक-जीवन में हमेशा के लिए प्रतिष्ठित हो गये''—ये उद्‌गार कथाकार और सम्पादक-नवीन चंद्र जोशी ने अध्यक्ष पद से बोलते हुए 'वर्तमान साहित्य' पत्रिका के पुरस्कार-समारोह में व्यक्त किये। मुख्य अतिथि के रूप में 'साहित्य के बदलते प्रतिरूप' विषय पर व्याख्यान देते हुए सुप्रसिद्ध समालोचक प्रो० निर्मला जैन ने कहा कि प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्य समाज के आगे मशाल लेकर चलता है। आज स्थिति दूसरी दिखायी देती है, जहाँ समाज बहुत तेजी से बदल रहा है। इस बदलते समाज, उसके नये मूल्यों और बाजारवादी प्रवृत्तियों का प्रभाव साहित्य पर और साहित्यकारों पर भी पड़ रहा है। आज चालू नारों और विमर्शों पर केन्द्रित साहित्य रचा जा रहा है, जिसका प्रभाव केवल तात्कालिक होता है। ऐसी रचनाएँ कालजयी नहीं हो सकतीं। इससे पहले 'वर्तमान साहित्य' की सम्पादक नमिता सिंह ने पुरस्कारों के लिए प्राप्त कहानियों की चर्चा की और कहा कि बदलते सामाजिक और राजनैतिक परिदृश्य में नयी समस्याओं से लोग जूझ रहे हैं। महानगरों में रहने वाले कथाकार इन नयी समस्याओं को अपना विषय नहीं बना पा रहे हैं। आज सार्थक कहानियाँ छोटे कस्बों, गाँवों और हाशिये के समाज के लोगों द्वारा लिखी जा रही हैं।

समारोह में श्री हरपाल सिंह 'अरुष' को पुरस्कार के रूप में रु० 11 हजार का चेक प्रदान किया गया, जो कमलेश्वर जी के परिवार द्वारा दिया जाता है। डॉ० श्रीप्रकाश शुक्ल को डॉ० मलखान सिंह सिसौदिया द्वारा स्थापित पुरस्कार के रूप में रु० 10 हजार का चेक प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिह्न भी भेंट किये गये। आमन्त्रित अतिथियों को स्मृति-चिह्न 'वर्तमान साहित्य' के सह सम्पादक डॉ० राजीवलोचन नाथ शुक्ल ने प्रदान किये।

स्पंदन सम्मान समारोह

दृढ़ संकल्प और आस्था के पावन संगम से पैदा नौनिहाल स्पंदन में वरिष्ठ आलोचक नंदकिशोर आचार्य ने सर्जना और जीवन की आपसदारी पर सारगर्भित विचार रखे।

साहित्य व अन्य कला आयामों की पोषक 'स्पंदन' संस्था के इस पहले दो दिनी सम्मान समारोह वर्ष 2009 का आरम्भ कला केन्द्र भारत भवन में हुआ। शीर्षस्थ कथाकार मृदुला गर्ग को स्पंदन कथा शिखर सम्मान, वरिष्ठ आलोचक शंभु गुप्त को स्पंदन आलोचना पुरस्कार, आधुनिक कविता के चर्चित हस्ताक्षर पंकज राग को स्पंदन कृति पुरस्कार, प्रियदर्शन को स्पंदन कथा पुरस्कार तथा चित्रकार आदित्य देव को स्पंदन चित्रकला पुरस्कार से वरिष्ठ कथाकार गोविन्द मिश्र ने बतौर कार्यक्रम अध्यक्ष अलंकृत किया। स्वागत उद्‌बोधन में सुप्रसिद्ध कथाकार तथा स्पंदन की संयोजक डॉ० उर्मिला शिरीष ने अगले समारोह से चार अन्य अर्थात् कुल नौ पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की। ये नए पुरस्कार नृत्य, सिने गीत लेखन, रंगमंच तथा साहित्य व कला में श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए दिए जायेंगे।

केदारनाथ ने शलाका सम्मान ठुकराया!

हिन्दी साहित्य अकादमी की ओर से शलाका सम्मान से सम्मानित किए गये साहित्यकार केदारनाथ सिंह द्वारा यह सम्मान लेने से इनकार करने के बाद साहित्य जगत में खलबली मच गई है। सिंह ने सम्मान न लेने के पीछे जो कारण दिए हैं उससे हिन्दी साहित्य अकादमी की विश्वसनीयता पर सवाल उठने लगे हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार राजेन्द्र यादव ने केदारनाथ के निर्णय का समर्थन करते हुए कह दिया कि शलाका सम्मान देने की परम्परा खत्म कर देनी चाहिए। दरअसल, अकादमी ने पहले तो कृष्ण बलदेव वैद को वर्ष 2008-09 के शलाका सम्मान के लिए नामित किया फिर उनका नाम काट दिया गया और किसी को यह सम्मान नहीं दिया गया। वैद को सम्मान से इसलिए वंचित किया गया क्योंकि उनके लेखन में कथित रूप से अश्लीलता है।

श्री वीरप्पा मोइली को 'मूर्तिदेवी पुरस्कार'

राजधानी दिल्ली में विधि मन्त्री और कन्नड़ लेखक श्री एम० वीरप्पा मोइली को ज्ञानपीठ का इक्कीसवाँ 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने प्रदान किया। यह पुरस्कार उनके महाकाव्य 'श्रीरामायण महान्वेषणम्' के लिए प्रदान किया गया है। पुरस्कारस्वरूप उन्हें दो लाख रुपए का चेक, श्रुतदेवी सरस्वती की प्रतिमा, प्रशस्ति-पत्र, श्रीफल एवं शॉल प्रदान किया गया।

प्रसिद्ध लेखक श्री अमरकांत को 'व्यास सम्मान'

प्रख्यात लेखक श्री अमरकांत के उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' को प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' देने की घोषणा की गई। के०के० बिड़ला फाउंडेशन की ओर से दिए गए इस सम्मान में ढाई लाख रुपए की नकद राशि दी जाती है।

'साहित्यश्री सम्मान' अर्पण समारोह

दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्त्वावधान में हिन्दी भवन सभागार में आयोजित समारोह में हिन्दी के क्षेत्र में कार्यरत और सक्रिय व्यक्तियों को साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र कोहली, गीतकार श्री बाल स्वरूप राही, कवि डॉ० गोविंद व्यास, साहित्यकार डॉ० रामशरण गौड़, साहित्यकार डॉ० बाल सुब्रह्मण्यम, विधिवेत्ता श्री आलोक कुमार, हिन्दीसेवी श्री जगदीश मित्तल, पत्रकार सुश्री पूजा मेहरोत्रा को 'साहित्यश्री सम्मान' दिया गया। मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष डॉ० योगानंद शास्त्री थे, अध्यक्षता श्री रामकिशन सिंघल ने की।

पंजाबी कवि पातर को 'सरस्वती सम्मान'

नई दिल्ली। पंजाबी कवि सुरजीत पातर को उनके कविता संग्रह 'लफ्जां दी दरगाह' के लिए प्रतिष्ठित सरस्वती सम्मान दिया जाएगा। के०के० बिरला संस्थान की ओर से शुरू इस पुरस्कार में पाँच लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न दिया जाता है। पूर्व मुख्य न्यायाधीश जी०बी० पटनायक की अध्यक्षता वाले 13 सदस्यीय निर्णायक मण्डल ने 65 वर्षीय पातर को वर्ष 2009 के इस सम्मान के लिए चुना। 'लफ्जां

दी दरगाह' का प्रकाशन 2003 में हुआ था। पिछले दस वर्षों में किसी भी भारतीय भाषा में लिखे और प्रकाशित हुए उत्कृष्ट साहित्य को हर वर्ष सरस्वती सम्मान के लिए चुना जाता है। पहली बार यह सम्मान वर्ष 1991 में हरिवंश राय बच्चन को उनकी आत्मकथा के लिए दिया गया था। उनके अलावा मराठी नाटककार विजय तेंदुलकर, मलयालम कवयित्री बालामनिअम्मा, बंगाली उपन्यासकार सुनील गंगोपाध्याय, उर्दू साहित्य के आलोचक शमसुर रहमान फारूकी, संस्कृत कवि जी०सी० पाण्डे और उड़िया कवि रमाकांत रथ भी यह सम्मान पा चुके हैं।

नीता माद्रा को पुरस्कार

शिक्षा जगत में विशिष्ट योगदान के लिए वर्ष 2009 का एडिथमे स्लिफे पुरस्कार वाराणसी के गायघाट की निवासी नीता माद्रा को मिला है। यह पुरस्कार मैथमेटिकल एसोसिएशन ऑफ अमेरिका द्वारा प्रदान किया गया है। साथ ही उन्हें इस संस्था का सदस्य बनाया गया है। यह जानकारी डी०ए०वी० पी०जी० कॉलेज के डॉ० प्रवेश भारद्वाज ने दी।

भारतीय प्रोफेसर को अमेरिका में मिला सम्मान

भारतीय मूल के अमेरिकी प्रोफेसर मनोरंजन 'मनो' मिश्रा को शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए 'रीजेंट्स रिसर्चर एवार्ड' से सम्मानित किया गया है। उन्हें पेयजल से खतरनाक रसायन आर्सेनिक अलग करने और अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय शोध के लिए सम्मानित किया गया है। नेवादा यूनिवर्सिटी में अक्षय ऊर्जा केन्द्र के निदेशक मनोरंजन मिश्रा भारत के उड़ीसा राज्य के रहने वाले हैं। वह 1988 से नेवादा यूनिवर्सिटी से जुड़े हैं। पेयजल से खतरनाक आर्सेनिक अलग करने सम्बन्धी अपने शोध की वजह से मिश्रा को अमेरिका में राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली। कई औद्योगिक संस्थानों ने उनकी इस विधि को प्राप्त करने के लिए यूनिवर्सिटी से लाइसेंस लिया है। इसके अलावा मिश्रा ने सौर ऊर्जा उत्पादन, हाइड्रोजन संग्रहण के लिए सूक्ष्म तकनीक का भी निर्माण किया है। हाल ही में मिश्रा ने काफी और मुर्गे के पंख से बायोडीजल ईंधन के उत्पादन की नई विधि को अंजाम दिया।

'ललद्यद' को सम्मान

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित वेद राही के उपन्यास 'ललद्यद' का चयन कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी जम्मू और कश्मीर की ओर से वर्ष 2009 की सबसे अच्छी पुस्तक के रूप में किया गया है। प्राप्त सूचनानुसार लेखक को पुरस्कारस्वरूप 51,000/- रुपये की राशि प्रदान की जाएगी।

संगोष्ठी/लोकार्पण

डॉ० हरेराम पाठक की तीन साहित्यिक कृतियों का लोकार्पण

डिगबोई महिला महाविद्यालय (असम) के सभागार में गत 6 फरवरी 2010 को डॉ० हरेराम पाठक की तीन साहित्यिक कृतियों का लोकार्पण किया गया। 'असमिया लोक साहित्य : एक विश्लेषण' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए डॉ० नगेन शईकीया ने कहा कि असमिया संस्कृति को असम के बाहर प्रचारित-प्रसारित करने में यह पुस्तक अपनी अहम् भूमिका अदा करेगी। डॉ० पाठक ने असमिया लोक साहित्य को हिन्दी में लिखकर न सिर्फ हिन्दी के पाठकों को असमिया लोक साहित्य एवं लोक जीवन से परिचित कराया है, बल्कि राष्ट्रीय एकता की भावना को भी व्यक्त किया है। द्वितीय पुस्तक 'पूर्वोत्तरीय राज्यों के साहित्यकारों का हिन्दी को योगदान' का लोकार्पण करते हुए डॉ० अलख निरंजन सहाय ने कहा कि डॉ० पाठक के पाँच वर्षों के निरन्तर प्रयास से पूर्वोत्तरीय राज्यों में बिखरे बारह सौ वर्षों के हिन्दी साहित्येतिहास को प्रस्तुत पुस्तक में समेटा गया है। तृतीय पुस्तक 'पूर्वोत्तरीय राज्यों में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी लेखन' का लोकार्पण करते हुए प्रो० हरिसिंह तोमर ने पूर्वोत्तरीय राज्यों में स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी लेखन की गतिविधियों पर प्रकाश डाला एवं उसके महत्त्व को रेखांकित किया।

'हाली : कवि एक रूप अनेक'

नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित एक समारोह में 'हाली : कवि एक रूप अनेक' शीर्षक पुस्तक का लोकार्पण योजना आयोग की सदस्या सैयदा हमीद ने किया। यह पुस्तक हाली के नाम से सुप्रसिद्ध हरियाणा के उर्दू शायर अलताफ हुसैन हाली पर आधारित हरियाणा कैडर के भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी व चुनाव आयुक्त एस०वाई० कुरैशी द्वारा लिखी गई है। यह भी उल्लेखनीय है कि सैयदा हमीद हाली की प्रपौत्री हैं। उन्होंने विमोचन करते हुए कहा कि हाली सुधारवादी शायर थे, जिन्होंने शृंगार और प्रेम की जगह अपनी शायरी के जरिए समाज को सुधारने का रास्ता अपनाया।

संतोष चौबे के कविता संग्रह लोकार्पित

भोपाल स्थित बहुकला केन्द्र भारत भवन के अंतरंग सभागार में प्रसिद्ध कवि श्री संतोष चौबे के दो कविता संग्रहों 'कोना धरती का' तथा 'इस अ-कवि समय में' का लोकार्पण किया गया। 25 एवं 26 फरवरी 2010 के दरम्यान वनमाली सृजन पीठ द्वारा सरोकार और पहले-पहल की साझेदारी में हुआ यह समारोह कविता कृतियों के बहाने एक सार्थक साहित्यिक विमर्श और सृजन-संवाद सिद्ध हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान के वरिष्ठ आलोचक श्री सुरेश पण्डित उपस्थित थे। अध्यक्षता ख्यातनाम कवि-नाटककार श्री राजेश जोशी ने की।

जयवर्धन की नाट्य कृतियाँ

नई दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में आयोजित समारोह में जयवर्धन की सद्य:प्रकाशित तीन नाट्य कृतियों—'अर्जेंट मीटिंग', 'हाय! हैंडसम' और 'झाँसी की रानी' का विमोचन दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष जयप्रकाश अग्रवाल ने किया। समारोह की अध्यक्षता अभिनेत्री सुषमा सेठ ने की।

आइंस्टाइन पर पुस्तक

नई दिल्ली में विख्यात लेखक विनोद कुमार मिश्र की आइंस्टाइन पर लिखी पुस्तक का विमोचन पूर्व राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम द्वारा किया गया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि ''अच्छी जीवनियाँ न केवल मनोरंजक सिद्ध होती हैं वरन् वे व्यक्ति को अद्भुत प्रेरणा देती हैं।'' एडिसन, डार्विन, लियोनार्डो द विंची, अल्फ्रेड नोबल, मैडम क्यूरी आदि की उत्कृष्ट जीवनियाँ लिखने वाले विनोद कुमार मिश्र की यह 51वीं पुस्तक है।

हिन्दी अकादमी का प्रसाद पर्व

नई दिल्ली की हिन्दी अकादमी द्वारा तीन दिवसीय 'प्रसाद पर्व' आयोजन के अन्तर्गत साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'आज के साहित्य के सन्दर्भ में प्रसाद' तथा 'प्रसाद, समाज एवं आज का रचना-समय' विषयक गोष्ठियों में विद्वान् वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। गोष्ठियों की अध्यक्षता क्रमश: प्रो० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा विभूतिनारायण राय ने की।

ऑस्ट्रेलिया के प्रवासियों की कविताएँ : बूमरैंग

नई दिल्ली। हिन्दी भवन के सभागार में 'दि इंडियन डाउन अंडर' और 'अक्षरम्' के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में काव्य-संग्रह 'बूमरैंग' का विमोचन कन्हैयालाल नंदन और अशोक चक्रधर ने किया।

'बूमरैंग' शीर्षक काव्य-संग्रह में ऑस्ट्रेलिया में प्रवास कर रहे हिन्दी कवियों की कविताएँ संकलित हैं, जिनका संकलन-सम्पादन रेखा राजवंशी ने किया है।

'लौटते शब्द का वध'

नई दिल्ली, इंडिया हेबिटेट सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में योगेन्द्र कुमार सिंह के कविता संग्रह 'लौटते शब्द का वध' का लोकार्पण डॉ० श्याम सिंह शशि एवं डॉ० कुँअर बेचैन ने किया।

चालीस साल का 'अनोखा सफर'

नई दिल्ली के पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स के सभागार में आयोजित समारोह में 'अनोखा सफर' शीर्षक आत्मकथा का विमोचन किया गया। यह आत्मकथा अमेरिकी मूल के रिचर्ड की चालीस साल के आध्यात्मिक सफर की कथा है। अमेरिका के शिकागो शहर में 1950 में जन्मे रिचर्ड बचपन से ही ईश्वर की खोज में अध्यात्म जगत् से जुड़कर राधानाथ स्वामी हो गए। वे गत चालीस साल से एशिया, यूरोप और अमेरिका में भ्रमण करते हुए भक्तिमार्ग का प्रचार कर आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध हो चुके हैं। 350 पृष्ठ की यह आत्मकथा अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित है।

भाषा और बोलियों की चिन्ता

नई दिल्ली के इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की रजत जयंती के समापन अवसर पर आयोजित व्याख्यान में सुप्रसिद्ध भाषाविद् व देश के सांस्कृतिक राजदूत प्रो० जी०एन० दवे ने कहा कि औपनिवेशवाद के बाद देश में खुले 350 से अधिक विश्वविद्यालय व इनसे सम्बद्ध 16 हजार से अधिक कॉलेज भाषाओं व बोलियों के संरक्षण में असफल रहे हैं। भाषाओं की विलुप्ति नरसंहार के समान है। उन्होंने कम से कम एक हजार कॉलेजों को ग्रामीण इलाकों में स्थापित किए जाने की जरूरत पर बल दिया। कुलपति प्रो० वी०एन० राजेशखरन पिल्लई ने भाषाओं व बोलियों के विलुप्तिकरण पर चिंता जताते हुए उनके विकास के लिए कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया।

शमशेर शती

नई दिल्ली के इंडया इंटरनेशनल सेंटर की एनेक्सी में रजा फाउंडेशन और एकल कला कविता केन्द्र द्वारा कवि शमशेर बहादुर सिंह की जन्म शती के अवसर पर 'शमशेर शती' शीर्षक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर खुद शमशेर द्वारा वाचित उनकी तेरह कविताओं की रिकॉर्डिंग सुनाई गई। आयोजन का आरम्भ वरिष्ठ चित्रकार सैयद हैदर रजा ने किया। शमशेर पर केन्द्रित अनेक आगामी आयोजनों की प्रस्तावना करते हुए कवि अशोक वाजपेयी ने बताया कि शमशेर पर केन्द्रित लगभग 15 पुस्तकें इस साल प्रकाशित की जाएँगी।

'शब्द का भविष्य' परिचर्चा

धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा पुस्तक का लोकार्पण एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ट्रस्ट द्वारा हिमाचल प्रदेश के दो चर्चित रचनाकारों प्रत्यूष गुलेरी की कृतियाँ 'दादी की दिलेरी' तथा बाल गीत, प्रत्यूष गुलेरी द्वारा सम्पादित चंद्रधर शर्मा गुलेरी की चर्चित कहानियाँ और हिमाचली लोककथाओं का लोकार्पण शिक्षाविद कृष्णचंद्र शर्मा ने किया।

अक्षरम् का आयोजन
8वाँ अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी उत्सव

पिछले कुछ वर्षों की भाँति इस बार भी 'अक्षरम्' द्वारा 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी उत्सव' बड़े गौरवशाली ढंग से आयोजित किया गया। यह इस शृंखला का आठवाँ आयोजन था जो भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के नये सभागार में माननीय डॉ० कर्णसिंह द्वारा उद्घाटित हुआ। मुख्य अतिथि थे महामहिम मुकेश्वर चुन्नी (भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त)। इस उत्सव में विदेशों से अनेक हिन्दी प्रेमी विद्वान् पधारे थे और उन्होंने पूरे मनोयोग से इसमें भाग लिया। पाँच सत्रों में बँटा यह विशाल आयोजन अपनी गरिमा और विशिष्टता लिए था।

आत्मकथाओं से बाहर निकलना होगा दलित साहित्य को : शिवमूर्ति

दलित साहित्य की पहचान केवल आत्मकथाओं से नहीं बनेगी बल्कि हमें इससे आगे निकलकर दूसरी विधाओं में भी लिखना होगा। केवल हमारा भुगता हुआ ही नहीं बल्कि हमारे भविष्य के संघर्षों को भी सामने लाना होगा। उक्त विचार प्रसिद्ध कथाकार शिवमूर्ति ने हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 17 मार्च को त्रिवेणी सभागार में आयोजित संगोष्ठी 'दलित अस्मिता का साहित्य' पर बीज वक्तव्य देते हुए व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती डॉ० विमल थोरात ने कहा कि संविधान ने हमें अधिकार तो दिए हैं किन्तु यह कानूनों में है, व्यावहारिकता में नहीं है। यह जिम्मा दलित साहित्य और साहित्यकारों को ही उठाना होगा। आगे उन्होंने कहा कि हमारे दलित साहित्य ने सौ वर्ष के भारतीय साहित्य को भी नया चेहरा दिया है।

अकादमी के सचिव प्रो० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 'परिचय दास' ने कहा कि साहित्य 'मनुष्यता' का सम्मान करता है और उसमें सबके लिए 'स्पेस' है। वंचित लोग एक नया 'सौन्दर्य शास्त्र' विकसित कर रहे हैं जिसका स्वागत किया जाना चाहिए।

'खयाल के फूल' का लोकार्पण सम्पन्न

अलवर में बनारस के शायर जनाब मेयर सनेही के पहले गजल संग्रह 'खयाल के फूल' का लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध गजलकार श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, विचारक श्री सुरेश पण्डित, समारोह एवं 'नया आयाम' के संयोजक श्री विनय मिश्र, समीक्षक प्रो० जयप्रकाश व्यास, शायर सुश्री ममता किरण ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता डॉ० दरवेश भारती एवं संचालन श्री विनय मिश्र ने किया।

दो पुस्तकों का लोकार्पण

12 मार्च को इंग्लैण्ड निवासी श्रीमती अरुणा सब्बरवाल के कविता संग्रह 'साँसों का सरगम' और कहानी संग्रह 'कहा-अनकहा' का लोकार्पण साहित्य अकादेमी परिसर में आयोजित एक समारोह में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० महीप सिंह ने किया।

काव्य में औरत की पीड़ा के स्वर

डॉ० वंदना मिश्रा के काव्य संग्रह 'कुछ सुनती ही नहीं लड़की' का लोकार्पण साहित्यकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने किया। डॉ० मिश्रा जी०डी० बिन्नानी पी०जी० कॉलेज मिर्जापुर में वरिष्ठ प्रवक्ता हैं। प्रो० काशीनाथ सिंह ने कहा कि पुस्तक में औरत की पीड़ा के स्वर हैं। उसमें एक बैचेनी झलकती है। इस अवसर पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० राधेश्याम दुबे, डॉ० संजय आदि ने भी विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ० गोरखनाथ पाण्डेय ने किया।

बुद्ध जीवन का परिचय है 'तथागत'

वाराणसी। प्रख्यात कथाकार मनु शर्मा ने कहा कि डॉ० बाबूराम त्रिपाठी के नए उपन्यास 'तथागत' में बुद्ध के जीवन का परिचय है। इसमें बुद्ध के संदेश को सहज व प्रभावी भाषा में व्यक्त किया गया है। श्री शर्मा विगत दिनों केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सारनाथ) के ग्रन्थालय सभागार में विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित उक्त पुस्तक के लोकार्पण व ग्रन्थ चर्चा संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। अध्यक्षीय सम्बोधन में केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० नवांग समतेन ने कहा कि बुद्ध के आध्यात्मिक स्तर तक लेखक को जाना कठिन होता है फिर भी उपन्यास 'तथागत' सामाजिक विषमताओं तथा राग-द्वेष को दूर करने में सहायक मैत्री व करुणा का संदेश पहुँचाने में मील का पत्थर साबित होगा। डॉ० नीरजा माधव ने कहा कि 'तथागत' आज के परिवेश में उपयुक्त उपन्यास है। डॉ० जितेन्द्र नाथ मिश्र ने कहा कि मनु शर्मा की लेखन परम्परा को डॉ० त्रिपाठी ने आगे बढ़ाया है। कथा शैली में सहज ढंग से बौद्ध धर्म व दर्शन को लेखक ने पिरो दिया है।

संस्कृत विश्वविद्यालय में डॉ० गंगानाथ झा दीक्षांत व्याख्यानमाला में प्रो० राजेन्द्र मिश्र का व्याख्यान

वाराणसी। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर स्थित योग साधना केन्द्र के संवाद कक्ष में आयोजित डॉ० गंगानाथ झा दीक्षांत व्याख्यान को सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० राजेन्द्र मिश्र ने कहा कि भारतीयों में लेखन कला अत्यन्त प्राचीन काल से

चली आ रही है। आज के बदलते परिवश में भी इनका कोई जोड़ नहीं है। ऐसे में भारत विरोधी इतिहासकारों की ओर से भारत में लेखन परम्परा शून्य होने का भ्रम फैलाना उचित नहीं है। भारत में तो विद्वानों का अद्‌भुत खजाना शुरू से ही विद्यमान रहा है। इसे लेकर किसी को कोई संशय नहीं होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि रामकथा अत्यन्त प्राचीन है। यह पूरी दुनिया में किसी न किसी रूप में देखने को मिलती है। भगवान श्रीराम का व्यक्तित्व पूरे विश्वहित में है। यह अलग बात है कि राम कथा की दो धाराएँ हैं। पहली वैदिक व दूसरी श्रमण धारा। एक धारा श्रीराम का व्यक्तित्व भगवान के रूप में मानती है जबकि दूसरी उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में देखती है। ऐसे में श्रीराम की ऐतिहासिकता को विवाद की परिध में लाना उचित नहीं है। अध्यक्षीय सम्बोधन में कुलपति प्रो० वी० कुटुम्ब शास्त्री ने कहा कि भारतीय यदि श्रीराम को नहीं जानते तो वह कुछ भी नहीं जानते। स्वागत कुलसचिव प्रो० गंगाधर पंडा, संचालन डॉ० हरिप्रसाद अधिकारी ने किया।

भाषाई बिखराव, भारतीय अस्मिता के हित में नहीं : शम्भुनाथ

वर्चस्ववादी ताकतें हमारी सांस्कृतिक अस्मिता को विकृत कर रही हैं। जहाँ जीवन शैली और खान-पान में एकरूपता आती जा रही है वहीं जातीय संकीर्णताएँ और संस्कृति के प्रतीकों को उभारा जा रहा है। हम चाहकर भी इन बन्धनों को तोड़ नहीं पा रहे हैं। आज भारतीय होने को भी पिछड़ेपन के रूप में प्रचारित किया जाने लगा है। पूँजीवादी ताकतें एक ओर पूँजी को वैश्वीकृत करते हुए बड़ी तेजी से बाजार को विस्तार दे रही हैं। वहीं स्थानीय जनता के बीच जातीयता, क्षेत्रवाद और भाषा के नाम पर भेद पैदा किया जा रहा है। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़ एवं दिल्ली सरीखे राज्यों में वहाँ की सरकार और पार्टियों से जुड़े लोग भाषाई और क्षेत्रवाद जैसे मुद्‌दों को हवा दे रहे हैं। भाषाई अस्मिता के सवाल पर आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए भोजपुरी और राजस्थानी भाषा को आगे लाया जा रहा है। किन्तु इसी प्रकार अगर अवधी, ब्रज, बुन्देली सहित अन्य भाषाओं की वकालत की जाती रहेगी तो हिन्दी कहाँ होगी? उक्त बातें कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रोफसर शम्भुनाथ ने महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय केन्द्र में 'भारतीय अस्मिता का प्रश्न' विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान में कहीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ आलोचक एवं बहुवचन के सम्पादक प्रो० राजेन्द्र कुमार ने कहा कि आन्तरिक भिन्नता का शोर अस्मिता के लिए खतरा है। किसी को केन्द्र में रखकर अन्य को हाशिए पर डालना, हमारी अस्मिता को धूमिल करना है। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन क्षेत्रीय केन्द्र के निदेशक संतोष भदौरिया ने किया।

दरभंगा में पुस्तक लोकार्पण

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित और कमलानन्द झा द्वारा सम्पादित पुस्तक 'राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की श्रेष्ठ कहानियाँ' का लोकार्पण 18 फरवरी 2010 को दरभंगा में किया गया। पुस्तक का लोकार्पण करती हुई ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ० पद्‌माशा झा ने कहा कि साहित्य में कोई किसी की उपेक्षा नहीं कर सकता। अपनी अपनी योग्यता की बदौलत लोग प्रसिद्धि पा ही लेते हैं। राजा राधिकारमण ने अपनी कहानियों के माध्यम से राष्ट्रीय फलक पर अपने सूबे की पहचान दिलायी थी।

हेमन्त शेष को प्रतिष्ठित बिहारी पुरस्कार

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन के प्रतिष्ठित बिहारी पुरस्कार वर्ष 2009 के लिए हेमन्त शेष के काव्य-संग्रह 'जगह जैसी जगह' को चुना गया है।

इस पुरस्कार के अन्तर्गत एक प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न व एक लाख रुपये की राशि भेंट की जाती है। हेमन्त शेष को 19वें बिहारी पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

पाठकों के पत्र

फरवरी-मार्च 2010 का संयुक्तांक मिला। 2067 नव सम्वतसर वि० के शुभागमन पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ स्वीकार करें। ग्रन्थ-गरिमा, सम्पादकीय, नए क्षितिज की ओर एवं सर्वेक्षण अत्यधिक विचारोत्तेजक एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध हुए हैं। धार्मिक ठेकेदारी पर करारा व्यंग्य वास्तविक यथार्थवादी अंकन है। 'शिक्षा के ढाँचे में बदलाव की जरूरत' समसामयिक ज्वलंत समस्या है जिसका समाधान देशहित-शिक्षाजगत् के लिए परमावश्यक है, क्योंकि शिक्षा ही राष्ट्र की मेरुदण्ड होती है। मूल्यांकन और पाठक की समस्या, पाठकों के पत्र, स्मृति शेष, लोकार्पण, सम्मान-पुरस्कार आदि स्थाई स्तम्भ के साथ-साथ आगामी प्रकाशन की सूचना तथा प्रकाशित मानक कृतियों पर सारगर्भित परिचयात्मक समीक्षाएँ वास्तव में पत्रिका के गंतव्य की सार्थकता प्रमाणित किए हैं। आगामी अंक और अधिक रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं जनोपयोगी सामग्री प्रकाशित कर पाठकों को रसानुभूति कराएगा—ऐसा विश्वास है।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

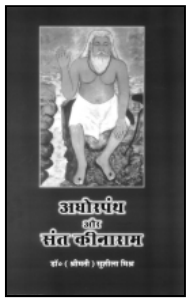

अघोरपंथ और संत कीनाराम

लेखिका :
डॉ० (श्रीमती) सुशीला मिश्र

द्वितीय संस्करण : 2010ई०
पृष्ठ : 216 + 12 पृ० चित्र
अजि. : रु० 150.00 **ISBN : 978-81-7124-741-7**
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

16वीं-17वीं शताब्दी के कालजयी औघड़ संत बाबा कीनाराम साक्षात् शिव थे। जनश्रुतियों के अनुसार शिव की नगरी काशी के शिवाला स्थित क्रीं-कुण्ड के औघड़ तख्त पर बाबा कीनाराम का सन् 1619 में अभिषेक हुआ था। उस समय उनकी उम्र मात्र 19 वर्ष थी। अभिषेक के पूर्व वे अपने तपस्याकाल में माँ हिंगलाज के दरबार में अपनी तपस्या पूर्ण करने पहुँचे। वहाँ उन्होंने घोर तपस्या की। माँ हिंगलाज ने प्रसन्न होकर कहा—''तू अब काशी जा। वहीं मैं भी आऊँगी और वहीं रहूँगी।'' यहाँ भैरव भीमलोचन ने भी उन्हें दर्शन दिये। माँ की आज्ञा से बाबा कीनाराम जी काशी स्थित महाश्मशान हरिश्चन्द्र घाट आये। जहाँ दत्तात्रेय भगवान् के रूप में बाबा कालूरामजी ने औघड़ तख्त क्रीं-कुण्ड के पीठाधीश्वर पद पर बाबा कीनाराम का अभिषेक किया। कहा जाता है माँ हिंगलाज क्रीं-कुण्ड में हर पल अदृश्य स्वरूप में विद्यमान हैं। बाबा कीनाराम अघोरपंथ के अग्रणी संत थे, उनके भक्तिपद अघोरपंथ के सूत्र हैं। उनके अनेक चमत्कार हैं जो भक्तों को प्रभावित करते हैं, अघोरपंथ की यह परम्परा क्रीं-कुण्ड में आज भी साक्षात् है।

कबीर साहब तथा दादूजी की भाँति औघड़ संत कीनारामजी भी मध्यकालीन साधना-साहित्य को दिशा देने वालों में अन्यतम हैं। कीनारामजी एक सिद्ध पुरुष थे। रामशाला, रामगढ़, हरिहरपुर, देवल, 'क्रीं' कुण्ड-वाराणसी के सामान्य जन-समुदाय के बीच बाबा कीनाराम के चमत्कारों की खूब चर्चा होती है।

अंत: साक्ष्य तथा बहि:साक्ष्य के आधार पर कीनारामजी के जन्म संवत्, जन्म स्थान, जाति, माता-पिता, गुरु एवं महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण दिया गया है। कीनारामजी के पूर्ववर्ती परम्परा पर विचार करते हुए अघोर पंथ के उद्‌भव-विकास तथा गद्‌दी-परम्परा के सम्बन्ध में सविस्तार विवेचन किया गया है। इस प्रकार कीनारामजी के जीवन-चरित को प्रथम बार इस पुस्तक में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

पुस्तक परिचय

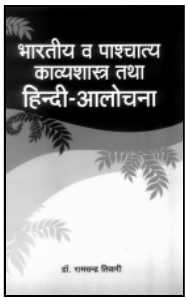

भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी-आलोचना

लेखक

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

पूर्णतया परिवर्धित संस्करण 2010 ई०

पृष्ठ : 308

सजि. : रु० 250.00 **ISBN : 978-81-7124-734-9**

अजि. : रु० 120.00 **ISBN : 978-81-7124-735-6**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

यह कृति विश्वविद्यालयों के उच्च कक्षा के छात्रों को दृष्टि में रखकर लिखी गई है। इसमें तीन खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में भारतीय काव्यशास्त्र की रूप-रेखा प्रस्तुत की गई है। दूसरे खण्ड में पाश्चात्य काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय दिया गया है। इस क्रम में उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भी प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है जिसमें आलोचना की विशिष्ट प्रवृत्ति या आलोचक-विशेष के व्यक्तित्व का विकास हुआ है। तीसरे खण्ड में हिन्दी-आलोचना के विकास को संक्षेप में प्रस्तुत करने के बाद प्रमुख आलोचकों के आलोचक-व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। वस्तुत: हिन्दी-आलोचना का विकास भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के संश्लेष से हुआ है। संश्लेषण की प्रक्रिया भारतेन्दु-युग में ही आरम्भ हो गई थी, आगे चलकर यह हिन्दी-आलोचना की नियति बन गई। प्लेटो, अरस्तू, होरेस, लोंगिनुस, कोलरिज, जानसन, मैथ्यू आर्नल्ड, क्रोचे रिचर्ड्स, इलियट आदि की चर्चा किए बिना हिन्दी-आलोचना अधूरी समझी जाने लगी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अवश्य यह चाहा था कि भारतीय काव्यशास्त्र को महत्त्व देते हुए उसके आलोक में पाश्चात्य काव्य-चिन्तन को देखा-परखा जाय। उनके बाद डॉ० नगेन्द्र ने इस कार्य को आगे बढ़ाने की कोशिश की किन्तु यह सम्भव नहीं हुआ और हुआ यह कि भारतीय-काव्य-चिन्तन अप्रासंगिक घोषित कर दिया गया और अब स्थिति यह है कि हिन्दी-आलोचना, पाश्चात्य-आलोचना (मुख्यत: अमेरिकी आलोचना) की अनुगामिनी बनकर रह गई है। आज हिन्दी का विद्यार्थी बिम्ब, प्रतीक, रूपवाद, अनुभूति की प्रामाणिकता, एम्बिग्यूइटि, द्वन्द्व, तनाव, विसंगति, विडम्बना, फैंटेसी, मिथक, शैली-विज्ञान, संरचनावाद, आधुनिकतावाद, यथार्थवाद, विचारधारा, संस्कृतिवाद, बहुलतावाद, परम्परावाद आदि अनेक पारिभाषिक शब्दों से आतंकित है। अब विरेचन-सिद्धान्त और रसवाद, वक्रोक्ति और अभिव्यंजना, निर्वैयक्तिकता और साधारणीकरण, वस्तुनिष्ठ समीकरण और विभावन-व्यापार, स्वच्छन्दतावाद और छायावाद आदि की तुलना इतिहास की वस्तु बन गई है। प्रस्तुत कृति में काव्य-सिद्धान्तों और पारिभाषिक शब्दों को उनके मूल सन्दर्भ के साथ स्पष्ट करने की कोशिश की गई है। प्रयत्न किया गया है कि छात्रों के मन से सिद्धान्तों और वादों का आतंक दूर हो जाय।

'असाध्य वीणा' की साधना (मूल्यांकन व पाठ)

सम्पादक

प्रो० वशिष्ठ अनूप

प्रथम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 116

अजि. : रु० 35.00 **ISBN : 978-81-7124-733-2**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अज्ञेय (7 मार्च 1911-14 अप्रैल 1987) समकालीन हिन्दी कविता के विशिष्ट कवि हैं। वे प्रयोगवाद और नयी कविता के प्रवर्तक रचनाकार हैं। उनका व्यक्तित्व नदी के द्वीप के समान सबसे अलग रहा है। उन्होंने अपने रचना-कर्म के माध्यम से हिन्दी की परम्परागत काव्यधारा को न केवल प्रभावित किया, अपितु उसे व्यापक स्तर पर परिवर्तित भी किया है। अज्ञेय ने अपने अन्वेषण, चिंतन, मनन, अध्ययन और अनवरत नये प्रयोगों के द्वारा कविता को अन्तर्वस्तु और शिल्प दोनों ही स्तरों पर समृद्ध करके उसे मनुष्य की सहज वृत्तियों से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया। स्वतन्त्रचेता और सतत जागरूक कवि अज्ञेय ने पश्चिमी विचारधाराओं और आन्दोलनों को यथेष्ट समर्थन देते हुए भी उनका अन्ध समर्थन नहीं किया। इस दृष्टि से उनका रचनाकार व्यक्तित्व सर्वथा भारतीय रहा। उनकी तमाम मिथकीय और अंचलीय पृष्ठभूमि से जुड़ी कविताएँ इस बात की साक्षी हैं। कविता के विषय में उनकी निजी मान्यताएँ रही हैं, जिनके पीछे उनकी चिंतनशीलता और भारतीय संस्कार स्पष्ट रूप से झलकते हैं। पाश्चात्य कवियों से भी उन्होंने पर्याप्त प्रभाव ग्रहण किया है और यह प्रभाव कविता तक ही सीमित न रहकर उनके समग्र साहित्य में झलकता है।

'असाध्य वीणा' अज्ञेय की सर्वोत्तम कविता है। कथ्य और संरचना दोनों ही दृष्टियों से यह हिन्दी की अप्रतिम कविता है। चीनी लोककथा पर लिखित जापानी लेखक आकोकुरा के कथा-संकलन 'द बुक ऑफ ट्री' में संकलित तथा 'टेमिंग ऑफ द हार्प' कहानी पर आधारित यह कविता अज्ञेय के कवि-कर्म की उपलब्धि तो है ही, अपने रचनाकाल से ही यह हिन्दी के विद्वानों और पाठकों के आकर्षण और चर्चा का विषय रही है। द्वैत से अद्वैत, मम से ममेतर और मौन से मुखर तथा मुखर से पुन: मौन की यात्रा करने वाली यह कविता अपनी अन्तिम निष्पत्ति में यह सन्देश देती है कि अहंकार छोड़कर पूरी क्षमता और समर्पण से प्रयास किया जाय तो किसी भी महान् लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यह कविता प्रतियोगी परीक्षाओं और लगभग प्रत्येक विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल है। इस पुस्तक में जिन विद्वानों के लेख संकलित हैं, उनके विचार एक जैसे नहीं हैं और ऐसा होना सम्भव भी नहीं है। इसीलिए ये लेख विभिन्न दृष्टियों से कविता के मर्म को उद्घाटित करते हैं।

सम्पूर्ण पत्रकारिता

लेखक

डॉ० अर्जुन तिवारी

तृतीय परिवर्धित संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 528

सजि. : रु० 450.00 **ISBN : 978-81-7124-411-9**

अजि. : रु० 300.00 **ISBN : 978-81-7124-412-6**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

स्पर्धा-संघर्ष के वर्तमान युग में दक्ष संचारकर्मी, आदर्श सम्पादक, विशेषज्ञ संवाददाता, उल्लेखनीय स्तम्भ लेखक, मनोरम समाचार प्रस्तोता, उत्तरदायी ब्यूरो चीफ, सफल जनसम्पर्क अधिकारी और कुशल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विशेषज्ञ के लिए अब पत्रकारिता प्रशिक्षण आवश्यक है जिसके निमित्त ही इस ग्रन्थ को उपस्थापित किया जा रहा है।

ग्यारह खण्डों में विभाजित इस पुस्तक में उन्चास अध्याय हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंग-प्रत्यंग के विवेचन द्वारा जन-सेवा, समाज-सुधार, नवोन्मेष एवं कलात्मक अभिरुचि के साथ ज्ञान-विस्तार वाली पत्रकारिता का इनमें अनुशीलन किया गया है। संचार क्रान्ति के इस दौर में तीव्र वैचारिकता का प्रतिफलन ही पत्रकारिता है। आज की पत्रकारिता लहरों पर आधारित है। आंगिक, मौखिक, लिखित, मुद्रित, दूरसंचार, साइबर लहरों ने सूचना-समृद्ध और सूचना-दरिद्र इन दो वर्गों में विश्व को विभाजित कर दिया है। मीडिया में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। अब 'पेनलेस' और 'पेपरलेस' पत्रकारिता की धूम मची हुई है। इन्टरनेट के वर्चस्व का प्रतीक

'ब्लाग' अब स्वतंत्र अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच हो रहा है। सर्वत्र 'स्टिंग आपरेशन' की चर्चा है तथा 'सूचना का अधिकार' एक वरदान है जिसके सन्दर्भ में अद्यतन सामग्री प्रस्तुत कर 'सम्पूर्ण पत्रकारिता' को अपने में परिपूर्ण बनाया गया है।

रेडियो, टीवी तथा मुद्रित माध्यमों के द्वारा संचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व, असाधारण एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन परिलक्षित हैं जिनमें असीम विश्व, अब सीमित ग्राम बन चुका है। इन्फॉर्मेशन टेक्नालॉजी के चलते शिक्षा, अनुसंधान में रोजगार के प्रचुर अवसर उपलब्ध हैं। अब जीवन शैली बदल चुकी है। समाज में समायोजित एवं गुणवत्ता के साथ रहने के निमित्त डिजिटल उपक्रम, उपग्रह एवं अन्तरिक्ष संसाधनों से संवादों के तत्काल विस्तार से सुपरिचित होना अपरिहार्य है जिसके लिए इस ग्रन्थ का अवगाहन आवश्यक है।

स्वर से समाधि

लेखक :

स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज'

द्वितीय संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 184

अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-597-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इस पुस्तक में स्वामी कृष्णानन्दजी ने शिव स्वरोदय को आधार बनाया है। शिव स्वरोदय में शिव ने पार्वती को स्वरोदय के विषय में उपदेश दिया है। योगियों की ऐसी मान्यता है कि प्रधानरूप से हमारे मेरुदण्ड के पास तीन प्रमुख नाड़ियाँ हैं—इड़ा, पिंगला, और सुषुम्ना। इड़ा—बाईं तरफ, पिंगला दाईं ओर, और सुषुम्ना दोनों के बीच में है। इसलिए इसको मध्यमा नाड़ी भी कहा जाता है। योगियों की यह मान्यता है कि हमारा श्वांस कभी इड़ा में प्रमुख रूप से चलता है तो कभी पिंगला में। यदि इन दोनों नाड़ियों में समानरूप से श्वांस का प्रवाह हो तो सुषुम्ना नाड़ी प्रवाहमान हो जाती है। इन्हीं नाड़ियों के नीचे कुण्डलिनी सुप्तावस्था में निवास करती है। जब दोनों नाड़ियों में श्वांस की समता हो जाती है तो कुण्डलिनी जाग्रत् होती है और सुषुम्ना नाड़ी के जरिये अपने प्रियतम शिव से मिलने के लिए त्रिकुटी से ऊपर सहस्रार में जाती है और वहाँ पहुँचकर शिव के साथ सम्मिलित हो जाती है तो योगी आनन्द की स्थिति में रहता है और जब तक यह कुण्डलिनी शक्ति वहाँ सहस्रार में स्थित रहती है योगी की यह उन्मनी अवस्था बनी रहती है। सहजयोग का यह कहना है कि यह कुण्डलिनी शक्ति सहजयोग के जरिये अपने प्रियतम शिव के साथ मिल जाती है तो ऐसे योगी को पता भी नहीं चलता और वह आनन्द की स्थिति में रहने लगता है।

स्वामी कृष्णानन्दजी, जो कि सहजयोगी हैं, इस पुस्तक में कहते हैं कि स्वर के अभ्यास से आत्मा के सारे क्लेश नष्ट हो जाते हैं और प्राणी पापों से निवृत्त हो जाता है और कालान्तर में निराकार परमात्मा का अनुभव प्राप्त कर लेता है। इस स्वर साधना से योगी तीनों लोकों का ज्ञाता हो जाता है और जीवन में पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर लेता है।

स्वरयोग का अभ्यास करने के लिए संसार-त्याग अथवा संन्यास की आवश्यकता नहीं है। इसके साधक जनक और कृष्ण की भाँति संसार में रहते हुए सदैव परमात्मा के अनुभव में निवास करते हैं।

यह पुस्तक 'स्वर से समाधि' सहजयोग की अत्यन्त उत्तम विधि को विस्तार से वर्णन करती है जो कि आचार्य रजनीश की वाममार्गीय पुस्तक 'संभोग से समाधि तक' का परिष्कृत रूप है।

आशा है कि पुस्तक सहजयोग के उद्देश्य से लोगों को प्रभावित करने में सफल होगी और इसके द्वारा अनेक लोगों को सहजज्ञान, समाधि और आनन्द की प्राप्ति होगी।

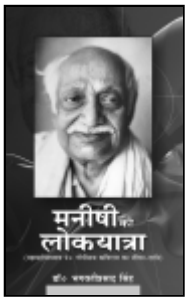

मनीषी की लोकयात्रा

[महामहोपाध्याय
पं० गोपीनाथ कविराज का
जीवन-दर्शन]

लेखक :

भगवतीप्रसाद सिंह

दशम संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 488 + 24 पृ० चित्र

सजि. : रु० 360.00 ISBN : 978-81-7124-740-0

अजि. : रु० 240.00 ISBN : 978-81-7124-554-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कविराज जी वर्तमान युग के महान् तत्वचिंतक हैं। ये भारत के मनीषियों की उस लम्बी और उदात्त परम्परा की एक जीवंत कड़ी हैं जिनके ज्ञानालोक से मानव निरन्तर प्रकाशपथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा प्राप्त करता रहा है।

कविराज जी के दार्शनिक चिन्तन और कृतित्व से भारतीय संस्कृति तथा साहित्य अनेक विध समृद्ध हुआ है। वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय (पूर्व गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज, बनारस) और उसका विश्वप्रसिद्ध 'सरस्वती-भवन' विविध रूपों में उनके द्वारा की गयी सेवाओं से ही वर्तमान स्थिति प्राप्त करने में समर्थ हुआ। यह हिन्दी-भाषी क्षेत्र का सौभाग्य था कि पूर्वी बंगाल में जन्म ग्रहण करते हुए भी इस महापुरुष की शिक्षा-दीक्षा और साधना भूमि होने का गौरव उसे ही प्राप्त हुआ। भौतिक दृष्टि से जन्मभूमि के आकर्षक एवं उत्कर्षविधायक प्रलोभनों तथा दबावों के बावजूद इनकी काशीनिष्ठा दृढ़ रही और वही आजीवन इनकी क्षेत्र-संन्यास-स्थली बनी रही। इनका अपना विशिष्ट क्षेत्र दर्शन, भक्तिसाधना तथा तंत्र था। इन विषयों पर पिछले पचास वर्षों में निर्मित हिन्दी साहित्य के वे प्रमुख प्रेरणास्रोत रहे हैं। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में आलोचना एवं शोध-ग्रन्थों की भूमिकाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखे गये निबन्धों के रूप में इनका मौलिक अवदान भी कम नहीं रहा है। विश्वविख्यात आध्यात्मिक मासिक 'कल्याण' के विकास में इनकी स्मरणीय भूमिका रही है। उसके यशस्वी सम्पादक श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ने इस दिशा में कविराजजी के सहयोग की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। 'कल्याण' के विशेषांकों की योजना तो बहुत अंश में इनके परामर्श पर ही आधारित होती थी। योगांक, शक्ति अंक, शिवांक, साधनांक, परलोक और पुनर्जन्मांक, इनके विशदज्ञान, प्रगाढ़ पाण्डित्य एवं प्रतिभा के संस्पर्श से ही अपूर्व लोकप्रियता प्राप्त कर सके। हिन्दी को इनकी लेखनी से तत्त्वविवेचन की एक नयी शैली का प्रसाद मिला। इसके अतिरिक्त अपने गूढ़ जीवन रहस्यों को प्रथम बार दर्शन तथा साधना से ग्रन्थरूप में प्रकाशित करने की अनुमति देकर इस राष्ट्रपुरुष ने हिन्दी-भाषी जनता पर अपार उपकार किया है।

यह ग्रन्थ प्रथम बार 1968 ई० में निकला था। उसके बाद कविराजजी धराधाम पर आठ वर्ष और विद्यमान रहे। उनका लोकांतरण 12 जून 1976 को हुआ। अत: नवीन संस्करण में इस मध्यवर्तीकाल की जीवनगाथा प्रस्तुत करना आवश्यक था। ग्रन्थान्त के 'उत्तरचरित' शीर्षक सातवें अध्याय द्वारा उसकी पूर्ति हुई है।

इस ग्रन्थ के माध्यम से कविराजजी जैसे एकांत साधक की आध्यात्मिक उपलब्धियों की चर्चा देश के कोने-कोने में फैली और सुदूर प्रान्तों के जिज्ञासु तथा साहित्यप्रेमी उनके जीवन, साधनापद्धति तथा कृतित्व की ओर आकृष्ट हुए। कितने तो स्वयं लम्बी यात्रा करके उनके दर्शनार्थ काशी गये।

प्रस्तुत ग्रन्थ के इस देशव्यापी स्वागत का कारण उसके अन्तर्गत संचित महासिद्ध योगी का साधनापुष्ट पाण्डित्य तथा गूढ़ जीवनानुभव है। हमारा विश्वास है कि इसके माध्यम से यश एवं ख्याति से दूर भागने वाले उस कालजयी ऋषि के चरित, तत्त्वज्ञान तथा दिव्य अनुभूतियों का संस्पर्श प्राप्त कर अगणित लोग आत्मोत्थान के पथ पर अग्रसर हो सकेंगे।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

पूर्वांचलीय राज्यों के साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य को योगदान, डॉ० हरेराम पाठक, प्रकाशक : गोपिका प्रकाशन, 10 प्रीतिनगर, डुडौली मार्ग, सीतापुर रोड, लखनऊ, प्रथम संस्करण, मूल्य : 450/-रु० मात्र

× × × भारतीय मानचित्र के पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों—असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, अरुणाचल प्रदेश एवं सिक्किम में हिन्दी भाषा की स्थिति और साहित्य-लेखन को विषय बनाकर विद्वान लेखक ने श्रमपूर्वक डी०लिट्० उपाधि हेतु प्रस्तुत प्रबन्ध की रचना की है। हिन्दी के साहित्येतिहास-लेखन के सन्दर्भ में यह कृति एक नया आयाम जोड़ती है।

असमिया लोक साहित्य : एक विश्लेषण, डॉ० हरेराम पाठक, प्रकाशक : गोपिका प्रकाशन, 10 प्रीतिनगर, डुडौली मार्ग, सीतापुर रोड, लखनऊ, प्रथम संस्करण, मूल्य : 150/- रु० मात्र

× × × 'लोक-जीवन के महासमुद्र में संचित हैं हमारे भूत, भविष्य, वर्तमान। लोक की भूमिका हमारे संस्कारों, परम्पराओं, मर्यादाओं, विधि-निषेधों से लेकर भविष्य की दृष्टि और मानकों तक विस्तृत है।' इसी परिभाषा के अन्तर्गत भारतीय लोक-जीवन और साहित्य को समझा जा सकता है न कि अंग्रेजी 'फोक' (folk) द्वारा। प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने असम के लोक-साहित्य का अध्ययन वहाँ के लोक-जीवन के परिदृश्य में प्रस्तुत किया है। भारत की सांस्कृतिक-एकसूत्रता का यह एक प्रामाणिक दस्तावेज है।

दिनकर-अनुशीलन, सम्पादन : डॉ० इंदरराज वैद, प्रकाशक : साहित्यानुशीलन समिति, चेन्नई, प्रथम संस्करण, मूल्य : 100/-

× × × राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के जन्मशताब्दी वर्ष पर चेन्नई स्थित साहित्यानुशीलन संस्था द्वारा दो सत्रों में आयोजित परिचर्चा में प्रस्तुत किये गये प्रपत्रों का संकलन है यह पुस्तक। अधिकांशत: दक्षिण के हिन्दी-विद्वानों द्वारा प्रस्तुत दिनकर-साहित्य का यह अनुसंधानपूर्ण अनुशीलन उत्तर और दक्षिण की सारस्वत-चेतना का सेतु बन गया है। राष्ट्रीय-सन्दर्भ में यह सारस्वत-सेतु ही हमारी एकीकृत सांस्कृतिक-चेतना का संवाहक बनता है अत: यह चिंतन-सत्र और समावेश चलते रहने चाहिए।

उमराव जान (काव्य), प्रभात पाण्डेय, प्रकाशक : समय प्रकाशन, आई-1/16, शांतिमोहन हाऊस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 110002, प्रथम संस्करण, मूल्य : 150/रु० मात्र

× × × आधुनिक युग की पेशबंदियों के बीच शताब्दी-पूर्व के किरदार की जीवंत धड़कनों से बावस्ता होने की कोशिश है 'उमराव जान'। सौ-साल पुराने लखनऊ और फैजाबाद की बस्तियों की ज़िन्दगी और तहजीब के बीच से गुज़रते हुए, उसकी रूमानियत के फलसफे के रू-ब-रू इतिहास, जनश्रुति और कल्पना के ताने-बाने से बुनी गयी यह कविता, अपने चरित्र को उसकी संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत करती है। युगों की अप्सरा, नगरवधू, गणिका, तवायफ आदि नामों की आड़ में सिसकती नारी की विवशता भी कवि पहचानता है। तभी तो चमक-दमक के दरम्यान × × धुँआ ही धुँआ वहाँ चारों ओर / कहीं न कहीं आग / तभी तो यह शोर / गुज़ारिश कि इस बज़्म में बार-बार / गुज़ारिश कि पहचानें दर और दीवार।

क़तरा-क़तरा सच (लघु कथा संग्रह), लक्ष्मी रूपल सम्भवत: स्वयं प्रकाशित, प्रथम संस्करण, मूल्य : 150/-रु० मात्र, सम्पर्क म०नं० 16, टाईप II, केन्द्रीय विद्यालय-2, स्टाफ कालोनी, सेक्टर-डी, चंडी मन्दिर, कैण्ट, पंचकूला (हरियाणा)

× × × लगभग 100 लघु कथाओं का यह संग्रह मानवीय संवेदना, नैतिक मूल्यों के विघटन, भ्रष्ट आचरण, सामाजिक-आर्थिक दबाव के बीच रिश्तों की पड़ताल, धार्मिक-विद्रूप, राजनीतिक छलछद्म के साथ नारी-विमर्श आदि विभिन्न स्तरों पर हमारे सामाजिक यथार्थ का आलेख है। इस रचना का अंतर्निहित व्यंग्य ही इन लघु कथाओं को सार्थकता प्रदान करता है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 **अप्रैल 2010** **अंक : 4**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)